Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَ لِلّٰهِ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِی الۡاَرۡضِ ؕ یَغۡفِرُ لِمَنۡ یَّشَآءُ وَ یُعَذِّبُ مَنۡ یَّشَآءُ ؕ وَ اللّٰهُ غَفُوۡرٌ رَّحِیۡمٌ

(सूरत आले-इम्रान आयत :130)

अनुवाद: और अल्लाह ही का है जो आकाशों और ज़मीन में है वह जिसे चाहता है क्षमा कर देता है और जिसे चाहता है आज़ाब देता है और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला और बार बार रहम करने वाला है।

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُهٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِهِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِهِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰهُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّةٌ

वर्ष 5

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 28

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

17 ज़विल क़अदह 1441 हिजरी कमरी 9 वफा 1399 हिजरी शमसी 9 जुलाई 2020 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

हिदायत पाने का इच्छुक समझ ले कि मौजूदा हालतों में चौदहवीं सदी के मुजद्दिद का यह काम है कि कसरे सलीब करे। क्योंकि सलीबी फ़ित्ना ख़तरनाक फैला हुआ है।

हमारा ध्यान उन लोगों की तरफ है जिन को हक़ की प्यास है परन्तु जो हक की तलाश ही नहीं चाहते, जिन की फितरत टेड़ी है वे हम से क्या लाभ उठा सकते हैं? याद रखो हिदायत तो उन को होती है जो द्वेष से काम नहीं लेते जो लोग लाभ नहीं उठाते जो विचार नहीं करते।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

उम्मत में मुजद्दिदीन का सिलसिला

अब यहां एक और बात भी याद रखने के काबिल है कि चूँकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने वफ़ात पा जाना था इस लिए ज़ाहिरी तौर पर एक नमूना और ख़ुदा दिखाने का माध्यम दुनिया से उठना था। इस के लिए अल्लाह तआला ने एक आसान राह रख दी कि قُلۡ اِنۡ کُنۡتُمۡ تُحِبُّوۡنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوۡنِیۡ (आले इम्रान :32) क्योंकि महबूब अल्लाह सीधे रास्ता पर ही होता है। ज़ीग़ रखने वाला कभी महबूब नहीं बन सकता और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहब्बत की वृद्धि और बढ़ोतरी के लिए हर नमाज़ में दुरूद शरीफ़ का पढ़ना ज़रूरी हो गया ताकि इस दुआ की क़बूलीयत के लिए सीधे राह पर आने का एक माध्यम हाथ आया। यह एक मानी हुई बात है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का वजूद ज़िल्ली तौर पर क़यामत तक रहता है। सूफ़ी कहते हैं कि मुजद्ददीन के नाम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के नाम पर ही होते हैं। अर्थात ज़िल्ली तौर पर वही नाम उनको किसी एक रंग में दिया जाता है।

शीया लोगों का यह ख़्याल कि विलाएत का सिलसिला हज़रत अली करमहुल्लाह वजहहो पर ख़त्म हो गया सरारत ग़लत है। अल्लाह तआला ने जो कमालात सिलसिला नबुव्वत में रखे हैं ,मजमूई तौर पर वह सम्पूर्ण हिदायत देने वाले पर ख़त्म हो चुके। अब ज़िल्ली तौर पर हमेशा के लिए मुजद्दिदों के माध्यम से दुनिया पर अपनी छाया डालते रहेंगे।अल्लाह तआला इस सिलसिला को क़यामत तक रखेगा ।

मैं फिर कहता हूँ कि इस वक़्त भी ख़ुदा तआला ने दुनिया को वंचित नहीं छोड़ा। और एक सिलसिला क़ायम किया है। हाँ अपने हाथ से उसने एक बंदा को खड़ा किया और वह वही है जो तुम में बैठा हुआ बोल रहा है। अब ख़ुदा तआला की रहमत के नुज़ूल का वक़्त है। दुआएं माँगो। इस्तिक़ामत चाहो और दुरूद शरीफ़ जो इस्तिक़ामत के प्राप्त करने का एक ज़बरदस्त माध्यम है बहुत अधिक पढ़ो ।मगर न रस्म और आदत के तौर पर बल्कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हसन और उपकार को समक्ष रखकर और आपके मदारिज और मुरातिब की तरक़्क़ी के लिए और आपकी कामयाबियों के लिए। इस का नतीजा यह होगा कि क़ुबूलियत दुआ का मीठा और मज़ेदार फल तुमको मिलेगा ।

दुआ की क़बूलीयत के माध्यम

दुआ की क़बूलीयत के तीन ही हैं।

प्रथम: اِنۡ کُنۡتُمۡ تُحِبُّوۡنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوۡنِیۡ (आले इम्रान 32)

द्वित्तीय: یٰۤاَیُّهَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا صَلُّوۡا عَلَیۡهِ وَسَلِّمُوۡا تَسۡلِیۡمًا (अल- अहज़ाब 57)

तीसरा अल्लाह तआला की मुहबत। अल्लाह तआला का यह आम क़ानून है कि वह अंबिया के नफूस की तरह दुनिया में बहुत से नफ़ूस क़ुदसिया ऐसे पैदा करता है जो कुदरती तौर पर इस्तिक़ामत रखते हैं।

यह बात भी याद रखो कि कुदरती तौर पर इन्सान तीन किस्म के होते हैं एक कुदरती रूप से ज़ालिम ले नफ़सही। दूसरे मुक़तसिद अर्थात कुछ नेकी से लाभान्वित और कुछ बुराई से मिले हुए। तीसरे बुरे कामों से नफरत करने वाले और नेकियों में आगे बढ़ने वाले। अत: यह आख़िरी सिलसिला ऐसा होता है कि इज्तिबा और इस्तिफ़ा के मुरातिब (स्थान) पर पहुंचते हैं और अंबिया अलैहिस्सलाम का गिरोह ऐसे पवित्र सिलसिला में से होता है और यह सिलसिला हमेशा हमेशा जारी है।दुनिया ऐसे लोगों से ख़ाली नहीं ।

कुछ लोग दुआ का निवेदन करते हैं कि मेरे लिए दुआ करो। मगर अफ़सोस है कि वह दुआ कराने के शिष्टाचार से वाक़िफ़ नहीं होते। इनायत अली ने दुआ की ज़रूरत समझी और ख़्वाजा अली को भेज दिया कि आप जा कर दुआ कराएं। कुछ फ़ायदा नहीं हो सकता। जब तक दुआ कराने वाला अपने अंदर एक योग्यता और इत्तबाअ (अनुकरण) की आदत न डाले दुआ कारगर नहीं हो सकती। मरीज़ अगर डाक्टर की इताअत ज़रूरी नहीं समझता संभव नहीं कि फ़ायदा उठा सके। जैसे मरीज़ को ज़रूरी है कि इस्तिक़ामत और मज़बूती के साथ डाक्टर की राय पर चले तो फ़ायदा उठाएगा। ऐसे ही दुआ कराने वाले के लिए शिष्टाचार और तरीक़े हैं।तज़करतुल औलिया में लिखा है कि एक बुज़ुर्ग से किसी ने दुआ की इच्छा की। बुज़ुर्ग ने फ़रमाया कि दूध चावल लाओ। वह आदमी हैरान हुआ।आख़िर वह लाया। बुज़ुर्ग ने दुआ की और इस आदमी का काम हो गया।आख़िर उसे बतलाया गया कि यह सिर्फ़ सम्बन्ध पैदा करने के लिए था। ऐसा ही बावा फ़रीद साहिब के तज़्किरा में लिखा है कि एक आदमी का रिजस्टरी गुम हुई और वह दुआ के लिए आपके पास आया तो आपने फ़रमाया कि मुझे हलवा खिलाओ और वह रिजस्टरी हलवाई की दुकान से मिल गई।

इन बातों के वर्णन करने से मेरा यह अभिप्राय है कि जब तक दुआ करने वाले और कराने वाले में एक सम्बन्ध न हो। प्रभावित नहीं होती। अत: जब तक व्याकुलता की हालत पैदा न हो और दुआ करने वाले की वेदना दुआ कराने वाले की वेदना न हो जाए कुछ असर नहीं करती। कई बार यही मुसीबत आती है कि

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ का यूरोप का सफर, सितम्बर अक्तूबर 2019 ई (भाग-10)

अल्लाह तआला ने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को समस्त मानव जाति के लिए रहमत बना कर भेजा

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मदीना में मुहाजिरीन, यहूद और अन्य जातियों के बाशिंदों के मध्य अमन का मुआहिदा तय करवाया,आप रियासत के निगरान निर्धारित हुए और उनकी क्रियादत में यह मुआहिदा इन्सानी अधिकार और हुक्मरानी का एक शानदार चार्टर साबित हुआ और उसने विभिन्न क़ौमों के मध्य अमन को यक़ीनी बनाया

झगड़ों के हल करने के लिए न्याय वाली अदालत का निज़ाम स्थापित फ़रमाया, आप ने यह स्पष्ट फ़रमाया कि अमीर और ताक़तवर , इसी तरह ग़रीब और कमज़ोर लोगों, सब के लिए एक ही क़ानून होगा और सबसे इस रियास्त के क़ानून के अनुसार ही सुलूक किया जाएगा

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बहुत ही उच्च शिक्षा का निज़ाम भी स्थापित फ़रमाया जिसके द्वारा इस समाज में रोशन ख़्याली के स्तर ऊंचा हो गए, यतीमों और कमज़ोरों की शिक्षा के लिए विशेष प्रबन्ध किए गए

पैग़ंबर इस्लाम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने व्यापार का भी एक नियमावली स्थापित फ़रमाई ताकि इस बात को यक़ीनी बनाया जा सके कि व्यापार इन्साफ़ और ईमानदारी से हो रहा है लोगों की सेहत की सुरक्षा का निज़ाम भी स्थापित किया गया।

ग़रीब और असहाय लोगों के अधिकार पूरा करने के हवाला से रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने विभिन्न स्कीमों और मन्सूबों का आरम्भ किया ताकि उनका जीवन स्तर बेहतर हो और वे अपने वक़ार से वंचित न रहें।

हमेशा गुलामी को ख़त्म करने की कोशिश की

औरतों और लड़कियों के अधिकार स्थापित फ़रमाए और इस दौर में यह अधिकार स्थापित फ़रमाए जब औरतों और लड़कियों के साथ भेदभाव सुलूक किया जाता था।

आप ने पड़ोसियों के अधिकार पर बहुत ज़ोर दिया।

प्रसिद्ध विश्वव्यापी संस्था यूनेस्को (UNESCO) में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुनहरी शिक्षाओं पर आधारित हुज़ूर पर नूर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ का ईमान वर्धक ख़िताब और तब्लीग़े इस्लाम।

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

8 अक्तूबर 2019 ई(दिनांक मंगलवार)

UNESCO की तरफ़ से हुज़ूर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ के सम्मान में आयोजन

5 बजकर 55 मिनट पर होटल से UNESCO जाने के लिए रवानगी हुई। 6 बजकर 5 मिनट पर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ UNESCO पधारे।

बाहरी दरवाज़ा ऑनरेबल डाक्टर Ouma Keta साहिब नेजो UNESCO में माली देश के एंबेसडर हैं, ने हुज़ूर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ का स्वागत किया और ख़ुश-आमदीद कहा और हुज़ूर अनवर को इमारत के अंदर इस हाल में ले गए जहां तकरीब का आयोजन किया जा रहा था

आयोजन में शामिल होनेवाले कई मेहमानों के संक्षिप्त ख़िताब

आज के आयोजन में 91 मेहमान शरीक थे। जिनमें माली के एमबसेडर डाक्टर Oumar Keita साहिब के अतिरिक्त

Mr. Jean Christophe Auger वज़ारत ख़ारजा फ्रांस में धार्मिक मामलों के परामर्श देने वाले

Mr. Clement Rouchouse वज़ारत दाख़िला फ्रांस के धर्मों के विभाग के डायरेक्टर

Mr. Gregoire Duelineau क्षेत्र Eaubonne के मेयर

Mr. Willy Breton NATO मैमोरियल के प्रैज़ीडैंट

Mr. Olivier de Lagarade Multiple Business School कैसी.ई.ओ

Mr. Aboubakar Dolo फ्रांस में माली के एंबेसडर के फ़रस्ट एड-वाइज़र

Mr. Ludovic Mendes मैंबर फ्रैंच पार्लेमंट

Mr. Patrick Vandangeon

Les Mureaux Town के कौंसिलर

और विभिन्न हुकूमती संस्थाओं के लोग,डायरैक्टर्ज़,जर्नलिस्ट और अन्य विभिन्न विभागों से सम्बन्ध रखने वाले लोग शामिल थे। प्रोग्राम के अनुसार 6 बजकर 10 मिनट पर आयोजन का आरम्भ हुआ

सबसे पहले यूनेस्को में माली के एंबेसडर डाक्टर Oumar Keita ने अपना सम्बोधन प्रस्तुत करते हुए कहा इस आयोजन में शामिल होना मेरे लिए बहुत गर्व की बात है। 2012 ई से मेरा देश माली दहशतगर्द हमलों की लपेट में है। वह अपने तंग दृष्टिकोण हमारी क़ौम पर लागू करना चाहते हैं। लेकिन यह हमारी क़ौमी इक़दार के ख़िलाफ़ हैं। हम बराबरी को पसंद करते हैं। क़ानूनी तौर पर हमारे देश में धार्मिक आज़ादी है

जमाअत मुस्लिमा अहमदिया 1987 से माली में मौजूद है और समाज की तरक़्क़ी के लिए सक्रिय भूमिका अदा कर रही है। आज यह जमाअत धार्मिक और सामाजिक कामों में सक्रिय है। हम जमाअत अहमदिया का शुक्रिया अदा करते हैं जो हमारे देश में स्कूल और हस्पताल खोल रही है। इसी तरह पानी के नलके लगा रही है और Humanity First के द्वारा अन्य बहुत से सामाजिक कामों में व्यस्त है

जमाअत अहमदिया अपने 17 रेडियो स्टेशनों 6 बड़ी मस्जिदें और स्कूलों की बनाने से हमारी क़ौम को इल्म के नूर से मुनव्वर कर रही है। मैं जमाअत अहमदिया को अपने इन कामों को जारी रखने का निवेदन करता हूँ।

मैं इमाम जमाअत अहमदिया का शुक्रिया अदा करता हूँ जो दुनिया में अमन

शेष पृष्ठ 8 पर

ख़ुत्बः जुमअः

सअद रज़ि ने कहा मेरी क़ौम से कहना कि अगर तुम में ज़िन्दगी का दम होते हुए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कोई तकलीफ़ पहुंच गई तो ख़ुदा के सामने तुम्हारा कोई बहाना नहीं होगा।

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया सुहैब तुम्हारा यह सौदा सब पहले सौदों से लाभदायक रहा। अर्थात पहले वस्तुओं के मुक़ाबला में तुम रुपया हासिल किया करते थे मगर अब रुपया के मुक़ाबला में तुमने ईमान हासिल कर लिया

हज़रत उमर रज़ि हज़रत सुहैब रज़ि से बहुत मुहब्बत करते थे और उनके बारे में उत्तम धारणा रखते थे यहां तक कि जब हज़रत उम्र रज़ि ज़ख़्मी हुए तो आप ने वसीयत की कि मेरी नमाज़ जनाज़ा सुहैब रज़ि पढ़ाएँगे और तीन दिन तक मुस्लमानों की इमामत करवाएंगे यहां तक कि शूरा वाले इस पर सहमत हो जाएं जिसने ख़लीफा बनना है।

अल्लाह तआला सअद रज़ि पर रहम फ़रमाए। वह ज़िन्दगी में भी और मौत के बाद भी अल्लाह और इस के रसूल का ख़ैर-ख़्वाह रहा।

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के महान बदरी सहाबी हज़रत सुहैब बिन सिनान और हज़रत सअद बिन रबी रज़ी अल्लाह अन्हुमा के उत्तम गुणों का वर्णन।

हक़ यह है कि दुनिया की तारीख़ में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पहले या आप के बाद कोई ऐसा आदमी नहीं गुज़रा जिसने औरत के अधिकारों की ऐसी सुरक्षा की हो जैसी आप ने की है।

हक़ीक़त यह है कि औरत की आज़ादी और अधिकारों को दिलवाने की वास्तविक शिक्षा इस्लाम की ही है।

दुनिया की वर्तमान अवस्था के सम्मुख हुकूमतों के इन्साफ़ के साथ निज़ाम चलाने और लोगों को जायज़ तरीक़ पर अपनी मांग पेश करने की नसीहत हुकूमत पाकिस्तान को मुल्ला के ख़ौफ़ से अहमदियों पर ज़ुल्म और सख़्तियां बढ़ाने की बजाय इन्साफ़ के दामन को हाथ में लेते हुए हुकूमत चलाने की नसीहत।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 5 जून 2020 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक़ इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आज में फिर सहाब रज़ि का , बदरी सहाबा रज़ि क़ा वर्णन करूँगा। उनमें से जिनका वर्णन है उनका नाम हज़रत सुहैब बिन सिनान रज़ी अल्लाह तआला अन्हो है। हज़रत सुहैब के पिता का नाम सिनान बिन मालिक और माता का नाम सलमा बिन्त क़ईद था। हज़रत सुहैब का वतन मूसल था। हज़रत सुहैब के पिता या चाचा किसरा की तरफ़ से उबुल्लह के आमिल थे। उबुल्लह दजला के किनारे एक शहर है जो बाद में बसरा कहलाया। रोमियों ने इस इलाक़े पर हमला किया तो उन्होंने हज़रत सुहैब को क़ैदी बना लिया जबकि वह अभी कम उमर थे। अबु-अल-क़ासिम मग़रिबी के अनुसार हज़रत सुहैब रज़ि का नाम अमीरा था, रोमियों ने सुहैब नाम रख दिया।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 169-170 सुहैब बिन सिनान,दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2017 ई)(अल्असाबा फ़ी तमीज़िस्सहाबा भाग 4 पृष्ठ 33-34 सुहैब बिन सिनान,दारुल फिक्र बेरूत 2001 ई)(मुअजेमुल बुलदान भाग 1 पृष्ठ 99 प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत)

हज़रत सुहैब का रंग बहुत लाल था। क़द न लम्बा था और न ही छोटा और सिर पर घने बाल थे।

(उसुदुल ग़ाबह भाग 3 पृष्ठ 41 सुहैब बिन सिनान, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2016ई)

हज़रत सुहैब रज़ि ने रोमियों में परवरिश पाई। उनकी ज़बान में लुक्नत थी। क्लब ने उन्हें रोमियों से ख़रीद लिया यह एक और शख़्स था)और उन्हें लेकर मक्का आ गया। फिर अब्दुल्लाह बिन जुदआन ने उन्हें ख़रीद कर आज़ाद कर दिया। हज़रत सुहैब अब्दुल्लाह बिन जदआन की वफ़ात तक उस के साथ मक्का में रहे यहां तक कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बिअसत हो गई। एक रिवायत के अनुसार हज़रत सुहैब की औलाद कहती है कि हज़रत सुहैब जब अक़ल तथा ज्ञान की उम्र को पहुंचे तो रुम से भाग कर मक्का आ गए और अब्दुल्लाह बिन जदअन के हलीफ़ बन गए और उनकी वफ़ात तक उनके साथ रहे।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 170 सुहैब बिन सिनान,दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2017 ई)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो उनके बारे में वर्णन फ़रमाते हैं कि "एक ग़ुलाम सुहैब थे जो रुम से पकड़े हुए आए थे। यह अब्दुल्लाह बिन जदआन के ग़ुलाम थे जिन्हों ने उनको आज़ाद कर दिया था। यह भी रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान लाए और आप के लिए उन्होंने कई किस्म की तकालीफ़ उठाईं।'

(तफ़सीर कबीर भाग 6 पृष्ठ 443)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो ने यह बात इस अन्तर्गत वर्णन फ़रमाई कि क़ुरआन करीम में जो है कि कुफ़्फ़ार कहते हैं कि यह क़ुरआन आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दूसरों या ग़ुलामों की मदद से बना लिया है तो इस का जवाब एक तो यह है कि यह ग़ुलाम तो मुस्लमान होने की वजह से मसीबतों और ज़ुल्मों का निशाना बने तो क्या उन्होंने अर्थात उन ग़ुलामों ने इन तकलीफों को अपने ऊपर वारिद करने के लिए, सहेड़ने के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मदद की थी और फिर न सिर्फ यह कि छुप के मदद की यह ज़ाहिर भी हुआ और फिर निहायत दृढ़ता से मुसीबतों और अत्याचार बर्दाश्त भी किए तो इस बात को हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि ने वर्णन फ़रमाया कि यह इंतिहाई घटिया एतराज़ है। यह तो उन मोमिनीन का, उन लोगों का जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान लाए ख़ुदा तआला और इस के रसूल पर ईमान था जिसने उन्हें साबित-क़दम रखा और उन्होंने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इस्लाम सीखा और अल्लाह तआला की वह्य पर ईमान लाए तो बहरहाल इस अन्तर्गत में यह था।

(उद्धरित तफ़सीर कबीर भाग 6पृष्ठ 441 से443)

हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ि कहते हैं कि मैं सुहैब रज़ि से दारे अर्क़म के दरवाज़े पर मिला तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तशरीफ़ फ़र्मा थे।

मैंने पूछा तुम्हारा क्या इरादा है? सुहैब रज़ि ने मुझ से कहा कि तुम्हारा क्या इरादा है? मैंने कहा मैं यह चाहता हूँ कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हूँ और आप का कलाम सुनूँ। हज़रत सुहैब रज़ि ने कहा कि मैं भी यही चाहता हूँ। हज़रत अम्मार रज़ि कहते हैं कि फिर हम दोनों आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुए तो आप ने हमारे सामने इस्लाम पेश किया जिस पर हमने इस्लाम क़बूल कर लिया। हम सारा दिन वहीं ठहरे रहे यहां तक कि हम ने शाम की। फिर हम वहां से छुपते हुए निकले। हज़रत अम्मार रज़ि और हज़रत सुहैब रज़ि ने तीस से अधिक लोगों के बाद इस्लाम क़बूल किया था।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 171सुहैब बिन सिनान,दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2017 ई)

हज़रत अन्स रज़ि ने वर्णन किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया इस्लाम लाने में सबक़त रखने वाले चार हैं। आप ने फ़रमाया कि मैं अरब में सबक़त रखने वाला हूँ। सुहैब रज़ि रुम में सबक़त रखने वाला है। सलमा न रज़ि अहले फ़ारस में सबक़त रखने वाला है। और बिलाल रज़ि हब्शा में सबक़त रखने वाला है।

(उसुदुल ग़ाबह भाग 3 पृष्ठ 39 सुहैब बिन सिनान, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2016 ई)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ि ने वर्णन किया कि सबसे पहले जिन्होंने अपने इस्लाम का ऐलान फ़रमाया वे सात हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, आप पर शरीयत उत्तरी थी और अबू बकर रज़ि और अम्मार रज़ि और उनकी वालिदा समय्या रज़ि और सुहैब रज़ि और बिलाल रज़ि और मकदाद रज़ि। अत: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को तो अल्लाह तआला ने आप के चाचा अबूतालिब के द्वारा महफ़ूज़ रखा और अबूबकर को अल्लाह तआला ने उनकी क़ौम के द्वारा से महफ़ूज़ रखा। इस बारे में पिछले ख़ुत्बा में मैं वज़ाहत कर चुका हूँ कि यह रावी का ख़्याल है वर्ना आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत अबूबकर रज़ी अल्लाह तआला अन्हो को भी इन ज़ुल्मों का निशाना बनना पड़ा था। यद्दपि शुरू में कुछ बचत हुई लेकिन फिर बनना पड़ा। बहरहाल रावी कहता है कि बाक़ीयों को मुशरिकों ने पकड़ लिया और लोहे की ज़िरहें पहनाईं और उन्हें धूप में जलाते थे। अत: उनमें से कोई भी ऐसा न था जिसने उनके साथ जिस बात पर वे चाहते थे मुवाफ़िक़त न कर ली हो सिवाए बिलाल रज़ि के क्योंकि उन पर अपना नफ़स अल्लाह की ख़ातिर बेहैसियत हो गया था और वह अपनी क़ौम के लिए भी बेहैसियत थे। वह उनको पकड़ते और लड़कों के सपुर्द कर देते और उन्हें मक्का की घाटियों में घुमाते फिरते और बिलाल रज़ि अहद, अहद कहते थे।

(सुनन इब्न माजा,किताबुस्सुन्नत,बाब फ़ज़ल सलमान वअबी ज़र व मिक़दाद,हदीस नम्बर150)

बहरहाल सख़्तियां तो उन सबने बर्दाश्त की थीं जैसा कि मैं ने कहा और हर एक ने अपने ईमान पर साबित क़दमी का इज़हार किया लेकिन बहरहाल हज़रत बिलाल रज़ि के बारे में जो रिवायत है वह यही है कि आप को बहुत ज़्यादा ज़ुल्मों का निशाना बनाया गया।

फिर वर्णन किया जाता है कि हज़रत सुहैब रज़ि इन मोमिनीन में से थे जिन्हें कमज़ोर समझा जाता था और जिन्हें मक्का में अल्लाह की राह में कष्ट दिए जाते थे।(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 171 सुहैब बिन सिनान,दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2017 ई)तकलीफों से उनको भी बहुत ज़्यादा गुज़रना पड़ा। एक रिवायत के अनुसार हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ि को इतनी तकलीफ़ दी जाती कि उन्हें मालूम न होता कि वह क्या कर रहे हैं। यही हालत हज़रत सुहैब रज़ि, हज़रत अबोफ़ाइदा रज़ि, हज़रत आमिर बिन फ़ुहैरह और अन्य लोगों की थी। इन सहाबा के बारे में यह आयत नाज़िल हुई कि

ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيْنَ هَاجَرُوْا مِنْۢ بَعْدِ مَا فُتِنُوْا ثُمَّ جٰهَدُوْا وَصَبَرُوْٓا اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ

(अन्नहल 111)

(अल्असाबा फ़ी तमीज़िस्सहाबा भाग 3 पृष्ठ 34 सुहैब बिन सिनान,दारुल फिक्र बेरूत 2001ई)

फिर तेरा रब निस्सन्देह लोगों को जिन्होंने हिज्रत की बाद उस के कि फ़ित्ना में मुबतला किए गए फिर उन्होंने जिहाद किया और सब्र किया तो यक़ीनन तेरा रब उस के बाद बहुत बख़्शने वाला और बार-बार रहम करने वाला है।

एक रिवायत के अनुसार मदीना की तरफ़ हिज्रत करने वालों में से जो सबसे आख़िर पर आए वह हज़रत अली रज़ि और हज़रत सुहैब बिन सिनान रज़ि थे। यह आधे रबी उलअव्वल की घटना है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम क़ुबअ में निवास कर रहे थे अभी मदीना के लिए रवाना नहीं हुए थे।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 172 सुहैब बिन सिनान,दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2017 ई)

एक रिवायत में है कि हज़रत सुहैब रज़ि जब हिजरत मदीना के लिए निकले तो मुशरिकीन के एक गिरोह ने आप का पीछा किया तो अपनी सवारी से उतरे और तरकश में जो कुछ था वह निकाल लिया और कहा हे क़ुरैश के गिरोह तुम जानते हो कि मैं तुम्हारे माहिर तीर अंदाज़ों में से हूँ। अल्लाह की क़सम तुम मुझ तक नहीं पहुंच सकते जब तक कि जितने तीर मेरे पास हैं वे सब तुम्हें मार न लूं। फिर मैं अपनी तलवार से तुम्हें मारूंगा यहां तक कि मेरे हाथ में कुछ भी न रहे। अत: तुम लोग जो चाहो करो अगर मेरा माल चाहते हो तो मैं तुम्हें अपने माल के बारे में बता देता हूँ कि मेरा माल कहाँ है और तुम मेरा रास्ता छोड़ दो। इन लोगों ने कहा ठीक है। अत: हज़रत सुहैब रज़ि ने बता दिया और जब वह , हज़रत सुहैब रज़ि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुए तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि इस सौदे ने अबू यह्या को फ़ायदा पहुंचाया। सौदा लाभदायक हुआ। रावी कहते हैं कि इस पर यह आयत नाज़िल हुई।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْرِيْ نَفْسَهُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ وَاللّٰهُ رَءُوْفٌۢ بِالْعِبَادِ

(अलबकर 208)

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 171-172 सुहैब बिन सिनान,दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2017 ई)

और लोगों में से ऐसा भी है जो अपनी जान अल्लाह की रज़ा के हुसूल के लिए बीच डालता है और अल्लाह बंदों के हक़ में बहुत ही मेहरबानी करने वाला है।

एक रिवायत में है कि हज़रत सुहैब मक्का से हिज्रत कर के आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुए। इस वक़्त आप क़बा में थे। आप के साथ हज़रत अबू बकर रज़ि और हज़रत उमर रज़ि भी थे। अर्थात उस वक़्त आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास हज़रत अबू बकर रज़ि और उमर रज़ि भी थे। इस वक़्त इन सब के सामने ताज़ा खजूरें थीं जो हज़रत कुलसूम बिन हिज़म रज़ि लाए थे। रास्ते में हज़रत सुहैब रज़ि को आंख की बीमारी हो गई था, आँखों की तकलीफ़ हो गई थी और उन्हें सख़्त भूख लगी हुई थी। सफ़र की वजह से थकान भी थी। हज़रत सुहैब रज़ि खजूरें खाने के लिए लपके तो हज़रत उमर रज़ि ने कहा या रसूलुल्लाह!सुहैब की तरफ़ देखें उसे आंख की बीमारी है और वह खजूरें खा रहा है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मज़ाक़ में फ़रमाया कि तुम खजूर खा रहे हो जबकि तुम्हें आंख की बीमारी है। आँखें सूजी हुई हैं, बह रही हैं। हज़रत सुहैब रज़ि ने निवेदन किया मैं अपनी आँख के इस हिस्सा से खा रहा हूँ जो ठीक है। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुस्कुरा दिए। फिर हज़रत सुहैब रज़ि ने हज़रत अबू बकर रज़ि से कहा कि आप ने मुझ से वादा किया था कि हिज्रत में मुझे साथ लेकर जाऐंगे मगर आप चले आए और मुझे छोड़ दिया। फिर उन्होंने अर्ज़ किया हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो वसल्लम! आप ने मुझे साथ लेकर जाने का वादा किया था परन्तु आप भी तशरीफ़ ले आए और मुझे छोड़ आए। क़ुरैश ने मुझे पकड़ लिया और मुझे क़ैद कर दिया और मैंने अपनी जान और अपने घर वालों को अपने माल के बदला में ख़रीदा। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया सौदा लाभदायक है। इस पर अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْرِيْ نَفْسَهُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ وَاللّٰهُ رَءُوْفٌۢ بِالْعِبَادِ

(अलबकर 208)

और लोगों में से ऐसा भी है जो अपनी जान अल्लाह की रज़ा के हुसूल के लिए बीच डालता है और अल्लाह बंदों के हक़ में बहुत मेहरबानी करने वाला है। हज़रत सुहैब रज़ि ने निवेदन किया हे रसूलुल्लाह मैंने एक मुद्द, लगभग आधा किलो आटा रास्ता के खर्च के लिया था। उसे मैंने अबवा स्थान पर गूँधा था यहां तक कि मैं आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हो गया।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 172 सुहैब बिन सिनान,दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2017 ई)

इस सफ़र में सिर्फ इतना खाया। यही ख़ुराक थी।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो उनके बारे में वर्णन फ़रमाते हैं कि

''सुहैब रज़ि एक मालदार आदमी थे। यह व्यापार करते थे और मक्का के

हैसियत वाले आदमियों में समझे जाते थे। मगर बावजूद उस के कि वह मालदार भी थे और आज़ाद भी हो चुके थे।' अब तो ग़ुलाम नहीं रहे थे ''क़ुरैश उनको मार मार कर बेहोश कर देते थे। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मदीना की तरफ़ हिज्रत कर गए तो आप के बाद सुहैब रज़ि ने भी चाहा कि वह भी हिज्रत कर के मदीना चले जाएं मगर मक्का के लोगों ने उनको रोका और कहा कि जो दौलत तुम ने मक्का में कमाई है तुम उसे मक्का से बाहर किस तरह ले जा सकते हो? हम तुम्हें मक्का से जाने नहीं देंगे। सुहैब रज़ि ने कहा अगर मैं यह सबकी सब दौलत छोड़ दूं तो क्या फिर तुम मुझे जाने दोगे? वह इस बात पर रज़ामंद हो गए और आप अपनी सारी दौलत मक्का वालों के सपुर्द कर के ख़ाली हाथ मदीना चले गए और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुए। आप ने सुहैब रज़ि! तुम्हारा यह सौदा सब पहले सौदों से लाभदायक रहा। अर्थात पहले वस्तुओं के मुक़ाबला में तुम रुपया हासिल किया करते थे मगर अब रुपया के मुक़ाबला में तुमने ईमान हासिल कर लिया।'

(दीबाचा तफ़सीरुल क़ुरआन, अन्वारुल उलूम भाग 20 पृष्ठ 194-195)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत सुहैब रज़ि के मक्का से मदीना हिज्रत करने के बाद उनके और हज़रत हारिस बिन सिम्मा रज़ि को भाई भाई बनाया। हज़रत सुहैब रज़ि जंग बदर, उहुद, ख़ंदक़ और बाक़ी समस्त जंगों में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शामिल हुए।

(उसुदुल ग़ाबह भाग 3 पृष्ठ 39 सुहैब बिन सिनान मकतबा दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2016 ई)

हज़रत आइज़ बिन अमरो रज़ि से रिवायत है कि हज़रत सलमान रज़ि, हज़रत सुहैब रज़ि और हज़रत बिलाल रज़ि लोगों में बैठे हुए थे कि उनके पास से अबू सुफ़ियान बिन हरब का गुज़र हुआ। लोगों ने कहा कि अल्लाह तआला की तलवारें अभी अल्लाह के दुश्मन की गर्दन पर नहीं चलें। इस पर हज़रत अबू बकर रज़ि ने कहा क्या तुम क़ुरैश के सरकरदा और सरदार के बारे में ऐसा कहते हो? यह बात नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बताई गई तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हे अबू बकर रज़ि शायद तुम ने उन्हें ग़ुस्सा दिला दिया है। अगर तुम ने उन्हें ग़ुस्सा दिलाया है तो तुमने अपने रब को ग़ुस्सा दिलाया है। अत: हज़रत अबू बकर रज़ि उन लोगों के पास वापिस गए और कहा कि हे हमारे भाईओ शायद तुम नाराज़ हो गए हो। उन्होंने कहा नहीं हे अबू बकर रज़ि अल्लाह आप से मग़फ़िरत फ़रमाए।

(मस्नद अहमद बिन हनबल भाग 6 पृष्ठ 885 हदीस आइज़ बिन अमरो, आलेमुल कुतुब बेरूत 1998ई)

हज़रत सुहैब रज़ि वर्णन करते हैं कि जिस युद्ध में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम शरीक हुए मैं इस में मौजूद था। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जो भी बैअत ली मैं इस में मौजूद था। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जो भी सरिया रवाना फ़रमाया मैं इस में शामिल था और आप जिस ग़ज़वा के लिए भी रवाना हुए में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शामिल था। मैं आप के दाएं तरफ़ होता या बाएं तरफ़। लोग जब सामने से ख़तरा महसूस करते तो मैं लोगों के आगे होता। जब लोग पीछे से ख़तरा महसूस करते तो मैं उनके पीछे होता। और मैंने कभी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को दुश्मनों के और अपने बीच नहीं होने दिया यहां तक कि आप की वफ़ात हो गई अर्थात आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफात हुई।

(अल्असाबा फ़ी तमीज़िस्सहाबा भाग 3 पृष्ठ 35 सुहैब बिन सिनान,दारुल फिक्र बेरूत 2001 ई)

हज़रत सुहैब रज़ि बुढ़ापे में लोगों को जमा कर के निहायत लुतफ़ के साथ अपने जंगी कारनामों की दिलचस्प घटनाएं सुनाया करते थे।

(उद्धरित अज़ सैरुस्सहाबा भाग 2 पृष्ठ 268 सुहैब बिन सिनान मकतबा दारुल इशाअत उर्दू बाज़ार कराची)

हज़रत सुहैब रज़ि की ज़बान में अजमियत थी अर्थात अरबों वाली फ़साहत नहीं थी। ज़ैद बिन असलम अपने पिता से रिवायत करते हैं कि मैं हज़रत उमर रज़ि के साथ चला यहां तक कि वह हज़रत सुहैब रज़ि के एक बाग़ में दाख़िल हुए जो आलीया स्थान में था। हज़रत सुहैब रज़ि ने जब हज़रत उमर रज़ि को देखा तो कहा यन्नासु यन्नसु। हज़रत उमर रज़ि को लगा कि अन्नास कहा रहे हैं तो हज़रत उम्र रज़ि ने कहा उसे क्या हुआ है? ये लोगों को क्यों बुला रहा है? रावी कहते हैं कि मैं ने अर्ज़ किया कि वह अपने ग़ुलाम को बुला रहे हैं जिसका नाम यन्नासु है। ज़बान में गिरह के कारण से वह उसे ऐसा कह रहे हैं। इस के बाद फिर वहां बातें हुईं तो हज़रत उमर रज़ि ने कहा कि हे सुहैब रज़ि तीन बातों के इलावा में तुम में कोई दोष नहीं देखता। अगर वह तुम में न होतीं तो मैं तुम पर किसी को फ़ज़ीलत न देता। मैं देखता हूँ कि तुम अपने आपको अरब की तरफ़ मंसूब करते हो जबकि तुम्हारी ज़बान अजमी है। और तुम अपनी कुनिय्यत अबू यहया बताते हो जो एक नबी का नाम है। और तुम अपना माल फ़ुज़ूल खर्च करते हो। हज़रत सुहैब रज़ि ने जवाब में कहा जहां तक मेरे माल फ़ुज़ूलखर्च करने का ताल्लुक़ है तो मैं उसे वहीं ख़र्च करता हूँ जहां ख़र्च करने का हक़ होता है। फ़ुज़ूल नहीं करता। जहां तक मेरी कुनिय्यत का ताल्लुक़ है तो वह आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अबू यहया रखी थी और मैं इस को हरगिज़ तर्क नहीं करूँगा। और जहां तक मेरे अरब की तरफ़ मंसूब होने का ताल्लुक़ है तो रोमियों ने मुझे छोटू उमर में क़ैदी बना लिया था इसलिए मैंने उनकी ज़बान सीख ली। मैं क़बीला निमिर बिन क़सित से सम्बन्ध रखता हूँ।

हज़रत उमर रज़ि हज़रत सुहैब रज़ि से बहुत मुहब्बत करते थे और उनके बारे में उच्छ धारणा रखते थे यहां तक कि जब हज़रत उम्र रज़ि ज़ख़्मी हुए तो आपओ ने वसीयत की कि मेरी नमाज़ जनाज़ा सुहैब रज़ि पढ़ाएँगे और तीन रोज़ तक मुस्लमानों की इमामत करवाईंगे यहां तक कि शूरा वाले इस पर सहमत हो जाएं जिसने ख़लीफ़ा बनना है।

हज़रत सुहैब रज़ि की वफ़ात शवाल38 महीना हिज्री में हुई, कुछ के अनुसार 39 हिज्री में वफ़ात हुई। वफ़ात के वक़्त हज़रत सुहैब रज़ि की उम्र तहत्तर वर्ष थी, कुछ रिवायतों के अनुसार सत्तर बरस थी। आप मदीना में दफ़न हुए।

(उसुदुल ग़ाबह भाग 3 पृष्ठ 41सुहैब बिन सिनान,दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2016 ई)

अगले सहाबी जिनका वर्णन है वह हज़रत सअद बिन रबीइ रज़ि हैं। हज़रत सअद बिन रबीइ रज़ि का सम्बन्ध अन्सार के क़बीला ख़ज़रज के ख़ानदान बनू हारिस से था। आप के पिता का नाम रबीअ बिन अम और माता का नाम हुज़ैला बिन्त इनबह था। हज़रत सअद रज़ि की दो बीवियां थीं एक का नाम उमरह बिन्त हज़म और दूसरी का नाम हबीबा बिन्त ज़ैद था। हज़रत सअद बिन रबीइ रज़ि की दो बेटियां थीं। एक बेटी उम्मे सअद थीं एक जगह उन्हें उम्मे सईद भी लिखा गया है उनका असल नाम जमीला था।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 395 भाग 8 पृष्ठ 303 उम्मे अमार, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2017 ई)

(उम्दतुल कारी भाग 20 पृष्ठ 216 दारे अहया अत्तुरास अलारबी बेरूत 2003 ई)

हज़रत सअद बिन रबीइ रज़ि ज़माना जाहिलीयत में भी लिखना पढ़ना जानते थे जबकि बहुत कम लोग यह जानते थे। हज़रत सअद क़बीला बनू हारिस के नक़ीब थे। उनके साथ हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि भी इसी क़बीला के सरदार थे। हज़रत सअद रज़ि बैअत अक़बा औला और अक़बा सानिया में शामिल थे।

(उसुदुल ग़ाबह भाग 2 पृष्ठ 214 दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2016 ई)

हिज्रत मदीना के वक़्त आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत सअद रज़ि और हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ रज़ि कोभाई भाई बनाया। सही बुख़ारी में रिवायत है कि हज़रत अब्दुर्रहिमान बिन औफ रज़ि वर्णन करते हैं कि जब हम मदीना में आए तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे और सअद बिन रबीअ रज़ि को आपस में भाई भाई बना दिया। तो सअद बिन रबीअ रज़ि ने कहा मैं अन्सार में से ज़्यादा मालदार हूँ। अत: मैं तक़सीम कर के आधा माल आप को दे देता हूँ और मेरी दो बीवियों में से जो आप रज़ि पसन्द करें मैं आप रज़ि के लिए इस से हट जाऊंगा । जब उस की इद्दत गुज़र जाए तो इस से आप निकाह कर लें। यह सुनकर हज़रत अब्दुल रहमान रज़ि ने हज़रत सअद रज़ि से कहा कि मुझे इस की कोई ज़रूरत नहीं। तुम सिर्फ यह बताओ यहां कोई बाज़ार है जिसमें व्यापार होता हो? हज़रत सअद रज़ि ने बताया कि क़ेनक़ाअ का बाज़ार है। हज़रत अब्दुल रहमान रज़ि यह मालूम कर के सुब्ह-सवेरे वहां गए और पनीर और घी ले आए। फिर इसी तरह हर सुबह वहां बाज़ार में जाते रहे। अभी कुछ अरसा न गुज़रा था कि हज़रत अब्दुल रहमान रज़ि आए और उन पर ज़ाफ़रान का निशान था तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूछा क्या कारण है? आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में जब हाज़िर हुए तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को नहीं पता था कि उनकी शादी हो गई है। ज़ाफ़रान का निशान डालते थे तो मतलब था कि शादी हो गई है। बहरहाल आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूछा कि क्या तुम ने शादी कर ली है? निवेदन किया जी हाँ। आप सल्लल्लाहो अलैहि

वसल्लम ने फ़रमाया किस से? उन्होंने कहा कि अन्सार की एक औरत से तो आप ने फ़रमाया कितना मेहर दिया है। तो उन्होंने अर्ज़ किया कि एक गुठली के बराबर सोना या कहा सोने की गुठली। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि वलीमा करो चाहे एक बकरी का सही।

(सही बुख़ारी किताबुल बुयूअ बाब मा जाअ फ़ी क़ौलिल्लाह अज़ व जल्ला फ़ा इज़ा कज़ैतो अस्सलातो.... हदीस नम्बर 2048)

उनकी हैसियत के अनुसार उनको वलीमा की दावत की तरफ़ तवज्जा दिलाई। हज़रत सअद बिन रबीइ रज़ि जंग बदर उहद में शामिल हुए और जंग उहद में शहीद हुए। जंग उहद के रोज़ रसूलुल्लाह सलल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मेरे पास सअद बिन रबी की ख़बर कौन लाएगा? एक शख़्स ने निवेदन किया कि मैं। अत: वह मक़्तूलीन में जा कर तलाश करने लगे। हज़रत सअद रज़ि ने इस आदमी को देखकर कहा तुम्हारा क्या हाल है। उसने कहा कि मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भेजा है ताकि मैं आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास तुम्हारी ख़बर ले के जाऊं तो हज़रत सअद रज़ि ने कहा कि आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में मेरा सलाम पेश करना और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह ख़बर देना कि मुझे नेज़े के बारह ज़ख़्म आए हैं और मेरे से लड़ने वाले दोज़ख़ में पहुंच गए हैं अर्थात जिसने भी मेरे से लड़ाई की इस को मैंने मार दिया है और मेरी क़ौम को यह कहना कि उनके लिए अल्लाह तआला के हुज़ूर कोई बहाना नहीं होगा अगर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम शहीद हो जाएं और तुम लोगों में से कोई एक भी ज़िन्दा रहा। वर्णन किया जाता है कि जो शख़्स उनके पास गया था वह हज़रत उबई बिन कअब रज़ि थे। हज़रत सअद रज़ि ने हज़रत उबै बिन कअब रज़ि से कहा अपनी क़ौम से कहना कि तुम से सअद बिन रबीअ रज़ि कहता है कि अल्लाह से डरो और एक और रिवायत भी है कि और जो वादा तुम लोगों ने अक़बा की रात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से किया था इस को याद करो। अल्लाह की क़सम ! अल्लाह के हुज़ूर तुम्हारे लिए कोई बहाना न होगा अगर कुफ़्फ़ार तुम्हारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ पहुंच गए और तुम में से कोई एक आँख हरकत कर रही हो अर्थात कोई शख़्स भी ज़िन्दा बाक़ी रहे तो अल्लाह के नज़दीक यह कोई बहाना नहीं होगा। हज़रत उबई बिन कअब रज़ि वर्णन करते हैं कि मैं अभी वहीं था अर्थात हज़रत सअद रज़ि के पास ही थे तो हज़रत सअद बिन रबीअ रज़ि की वफ़ात हो गई। इस वक़्त वह ज़ख़्मों से चूर थे। मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में वापस हाज़िर हुआ और आप को सब बता दिया कि यह बातचीत हुई थी। यह उनकी हालत है और इस तरह शहीद हो गए। इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह तआला इस पर रहम फ़रमाए। वह ज़िन्दगी में भी और मौत के बाद भी अल्लाह और इस के रसूल की भलाई चाहने वाला रहा। हज़रत सअद बिन रबीअ रज़ि और हज़रत ख़ारिजा बिन ज़ैद रज़ि को एक ही क़ब्र में दफ़न किया गया।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 396 दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2017 ई) (अल्इस्तेयाब भाग 2 पृष्ठ 157 दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2010 ई) (उसुदुल ग़ाबह भाग 2 पृष्ठ 432-433 दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2016 ई)

हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि हज़रत सअद रज़ि की शहादत की घटना वर्णन करते हुए इस तरह लिखते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी मैदान में उतर आए हुए थे और शहीदों की लाशों की देख-भाल शुरू थी। जो नज़ारा उस वक़्त ,अर्थात जब जंग ख़त्म हो गई, मुसलमानों के सामने था वह ख़ून के आँसू रुलाने वाला था। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ज़ख़्मी भी थे लेकिन आप फिर भी मैदान में आ गए। शीहीदों की लाशों की देख-भाल शुरू हुई, किस तरह तदफ़ीन करनी है। ज़ख़्मियों को सँभालने की तरफ़ ध्यान हुआ तो बहरहाल उस वक़्त जो नज़ारा मुस्लमानों के सामने था वह ऐसा ख़ौफ़नाक था कि कहते हैं कि ख़ून के आँसू रुलाने वाला था। सत्तर मुस्लमान जंग के मैदान में लुथड़े हुए मैदान में पड़े थे और अरब की जंगली रस्म मुसला का ख़तरनाक नज़ारा पेश कर रहे थे। अर्थात न केवल यह कि शहीद हुए थे बल्कि मुसला किया गया था। उनके अंग काटे गए थे। उनकी शक्लों को बिगाड़ा गया था। आप लिखते हैं कि इन मक़्तूलीन में सिर्फ छ: मुहाजिर थे और बाक़ी सब अन्सार से सम्बन्ध रखते थे। क़ुरैश के मक़्तूलों की संख्या तेईस थी। जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने चाचा और रज़ाई भाई हमज़ा बिन अब्दुल मुतलिब रज़ि की लाश के पास पहुंचे तो बे-ख़ुद से हो कर रह गए क्योंकि ज़ालिम हिन्दा जो अबूसुफ़ियान की पत्नी थी, ने उनकी लाश को बुरी तरह बिगाड़ा हुआ था। थोड़ी देर तक तो आप ख़ामोशी से खड़े रहे और आप के चेहरे से ग़म तथा ग़ुस्सा के निसान नुमायां थे। एक लम्हा के लिए आप की तबीयत इस तरफ़ भी माइल हुई कि मक्का के इन वहशी दरिंदों के साथ जब तक इंही जैसा सुलूक न किया जाएगा वह शायद होश में नहीं आएँगे। उनको सबक़ नहीं मिलेगी मगर आप इस ख़्याल से रुक गए और सब्र किया बल्कि इस के बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुस्ला की जो रस्म थी, शक्लों को बिगाड़ने वाली रस्म, अंग काटने वाली रस्म उस को इस्लाम में हमेशा के लिए हराम क़रार दे दिया और फ़रमाया दुश्मन चाहे कुछ करे तुम इस किस्म के वहशी तरीक़ा से बहरहाल रुके रहो और नेकी और एहसान का तरीक़ा धारण करो। आप की फूफी सफिया बिन्त अब्दुल मुतलिब अपने भाई हमज़ह रज़ि से बहुत मुहब्बत रखती थीं। वह भी मुस्लमानों की हार की ख़बर सुन् कर मदीना से निकल के आईं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनके साहिबज़ादे ज़ुबैर बिन अल्अवाम रज़ि से फ़रमाया कि अपनी माता को मामूं की लाश न दिखाना मगर बहन की मुहब्बत कब चैन लेने देती थी। बेटे ने तो कहा कि हज़रत हमज़ह रज़ि की लाश न देखें क्योंकि मुस्ला किया हुआ है। चेहरा बिगाड़ा हुआ है। इन्होंने इसरार के साथ कहा कि मुझे हमज़ह रज़ि की लाश दिखा दो। मैं वादा करती हूँ कि सब्र करूँगी और कोई रोने धोने की बात मुँह से नहीं निकालूंगी। अत: वो गईं और भाई की लाश देखकर इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन पढ़ती हुई ख़ामोश गईं।

फिर लिखते हैं कि क़ुरैश ने दूसरे सहाबा की लाशों के साथ भी यही सुलूक किया था। अत: आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के फूफेर भाई भाई अब्दुल्लाह बिन जहश की लाश को भी बुरी तरह बिगाड़ा गया था। जूँ-जूँ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक लाश से हट कर दूसरी नाश की तरफ़ जाते थे आप के चेहरे पर ग़म तथा दुख के आसार ज़्यादा होते जाते थे। शायद इसी अवसर पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि कोई जा कर देखे कि सअद बिन अलरबीअ रईस अन्सार का क्या हाल है। आया वह ज़िन्दा हैं या शहीद हो गए हैं? क्योंकि मैंने लड़ाई के वक़्त देखा था कि वह दुश्मन के नेज़ों में बुरी तरह घिरे हुए थे। आप के फ़रमाने पर एक अन्सारी सहाबी अबी बिन कअब रज़ि गए और मैदान में इधर उधर सअद रज़ि को तलाश किया मगर कुछ पता न चला। आख़िर उन्होंने ऊंची ऊंची आवाज़ें देनी शुरू कीं और सअद रज़ि का नाम ले-ले कर पुकारा मगर फिर भी कोई सुराग़ न मिला। मायूस हो कर वह वापस जाने को थे कि उन्हें ख़्याल आया कि मैं आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का नाम लेकर तो पुकारूँ शायद इस तरह पता चल जाए। पहले तो ख़ाली नाम लेकर पुकारा फिर कहा कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का नाम ले के इस तरह पुकारूँ कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तुम्हें तलाश करने के लिए मुझे भेजा है। अत: उन्होंने बुलन्द आवाज़ से पुकार कर कहा कि सअद बिन रबीअ रज़ि कहाँ हैं? मुझे रसूलुल्लाह ने उनकी तरफ़ भेजा है। इस आवाज़ ने सअद रज़ि के आदे मुर्दा जिस्म में एक बिजली की लहर दौड़ा दी। लाशों के बीच में आधे मुर्दा पड़े हुए थे। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का नाम सुना तो एक दम जिस्म में हरकत पैदा हुई और उन्होंने चौंक कर मगर निहायत धीमी आवाज़ में जवाब दिया। कौन है? मैं यहां हूँ। अबी बिन कअब रज़ि ने गौर से देखा तो थोड़े फ़ासिला पर कत्ल होने वालों के एक ढेर में सअद रज़ि को पाया जो उस वक़्त मृत्यु की हालत में जान दे रहे थे। अबी बिन कअब रज़ि ने उनसे कहा कि मुझे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसलिए भेजा है कि तुम्हारी हालत से आप को सूचना दूं। सअद ने जवाब दिया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मेरा सलाम अर्ज़ करना और कहना कि ख़ुदा के रसूलों को उन के अनुयायियों की क़ुर्बानी और इख़लास की वजह से जो सवाब मिला करता है ख़ुदा आप को वह सवाब सारे नबियों से बढ़ चढ़ कर प्रदान फ़रमाए और आप की आँखों को ठंडा करे और मेरे भाई मुस्लमानों को भी मेरा सलाम पहुंचाना और मेरी क़ौम से कहना कि अगर तुम में ज़िन्दगी का दम होते हुए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कोई तकलीफ़ पहुंच गई तो ख़ुदा के सामने तुम्हारा कोई बहाना नहीं होगा। यह कह कर सअद रज़ि ने जान दे दी

(उद्धरित सीरत ख़ातमुन्नबिय्यीन पृष्ठ 500-501)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो ने भी इस घटना का वर्णन अपने शब्दों में इस तरह वर्णन फ़रमाया है कि"जंग उहद की एक घटना है। जंग के बाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबी इब्न कअब रज़ि को फ़रमाया कि जाओ और ज़ख़्मियों को देखो। वह देखते हुए हज़रत सअद बिन रबीअ रज़ि के पास पहुंचे जो सख़्त ज़ख़्मी थे और आख़िरी सांस ले रहे थे। उन्होंने

उनसे कहा कि अपने मुताल्लिक़ीन और प्रियों को अगर कोई सन्देश देना हो तो मुझे दे दें। हज़रत सअद रज़ि ने मुस्कुराते हुए कहा कि मैं मुंतज़िर ही था कि कोई मुसलमान इधर आए तो पैग़ाम दूं। तुम मेरे हाथ में हाथ देकर वादा करो कि मेरा पैग़ाम ज़रूर पहुंचा दोगे और इस के बाद उन्होंने जो पैग़ाम दिया वह यह था कि मेरे भाई मुसलमानों को मेरा सलाम पहुंचा देना और मेरी क़ौम और मेरे रिश्तेदारों से कहना कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमारे पास ख़ुदा तआला की एक बेहतरीन अमानत हैं और हम अपनी जानों से इस अमानत की हिफ़ाज़त करते रहे हैं। अब हम जाते हैं।' हम तो जा रहे हैं। इस दुनिया से विदा हो रहे हैं। ''और इस अमानत की सुरक्षा तुम्हारे सपुर्द करते हैं। ऐसा न हो कि तुम उस की सुरक्षा में कमज़ोरी दिखाओ।' हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि इस घटना को वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं कि ''देखो ऐसे वक़्त में जब इन्सान समझता हो कि मैं मर रहा हूँ क्या-क्या विचार उस के दिल में आते हैं। वह सोचता है मेरी बीवी का क्या हाल होगा। मेरे बच्चों को कौन पूछेगा। मगर इस सहाबी रज़ि ने कोई ऐसा पैग़ाम न दिया। सिर्फ यही कहा कि हम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हिफ़ाज़त करते हुए इस दुनिया से जाते हैं तुम भी इसी रास्ता से हमारे पीछे आ जाओ।'' सबसे बड़ा काम यही है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हिफ़ाज़त करनी है। लिखते हैं कि ''इन लोगों के अन्दर यही ईमान की क़ुव्वत थी जिससे उन्होंने दुनिया हिला दिया और क़ैसर तथा किसरा की सल्तनतों के तख़्ते उलट दिए। क़ैसर रुम हैरान था कि ये कौन लोग हैं। किसरा ने अपने सिपहसालार को लिखा कि अगर तुम इन अरबों को भी शिकस्त नहीं दे सकते तो फिर वापस आ जाओ और घर में चूड़ियां पहन कर बैठो।' उसने अपने जरनैल को यह कहा कि ''ये गोहें खाने वाले लोग हैं उनको भी तुम नहीं रोक सकते।' बिलकुल मामूली लोग हैं, खाना भी उनको नहीं मिलता। गोहे खाते हैं ये लोग। ''उसने जवाब दिया यह तो आदमी मालूम ही नहीं होते। यह तो कोई बला हैं। ये तलवारों और नेज़ों के ऊपर से कूदते हुए आते हैं।' (तफ़सीर कबीर भाग 7 पृष्ठ 338) उनमें ऐसा जोश तथा जज़बा है। उनको हम किस तरह शिकस्त दे सकते हैं।

एक बार हज़रत सअद बिन रबीअ रज़ि की साहिबज़ादा उम्मे सअद हज़रत अबू बकर रज़ि के पास आएं तो उन्होंने उस के लिए अपना कपड़ा बिछा दिया। हज़रत उमर रज़ि आए तो उन्होंने पूछा यह कौन है? हज़रत अबू बकर रज़ि ने फ़रमाया यह उस शख़्स की बेटी है जो मुझ से और तुमसे बेहतर था। हज़रत उम्र ने कहा हे ख़लीफ़ा रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वह कौन है? हज़रत अबू बकर रज़ि ने फ़रमाया कि वह शख़्स जिसकी वफ़ात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माना में हुई और उसने जन्नत में अपना ठिकाना बना लिया जबकि मैं और तुम बाक़ी रह गए।

(अलअसाबह भाग 2 पृष्ठ 315 सअद बिन अलरबीअ, दारुल फिक्र बेरूत 2001 ई)

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि वर्णन करते हैं कि हज़रत सअद बिन रबी की बीवी अपनी दोनों बेटियों के साथ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आएं और निवेदन किया कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो वसल्लम! ये दोनों सअद बिन रबीअ रज़ि की बेटियां हैं जो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ लड़ते हुए उहद के दिन शहीद हो गए थे। और उनके चाचा ने इन दोनों का माल ले लिया है अर्थात हज़रत सअद रज़ि की जायदाद जो थी उन के चाचा ने ले ली है। उन्हें कुछ नहीं मिला और उनके लिए माल नहीं छोड़ा और इन दोनों का निकाह भी नहीं हो सकता जब तक उनके पास माल न हो। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह तआला उस के बारे में फ़ैसला फ़रमाएगा। इस पर मीरास के आदेशों पर आधारित आयतें नाज़िल हुई। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दोनों के चाचा को बुलवाया और फ़रमाया कि सअद की बेटियों को सअद के माल का तीसरा हिस्सा दो और इन दोनों की वालिदा को आठवां हिस्सा दो और जो बच जाए वह तुम्हारा है

(सुनन अत्तिरमज़ी,किताबुल फ़रायज़, बाब मा जाआ फ़िल मीरास अलबनात,हदीस नम्बर 2092)

इस घटना का वर्णन करते हुए इस बारे में कुछ विस्तार हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि ने सीरत ख़ातमन्निबय्यीन में इस तरह लिखी है कि हज़रत सअद रज़ि एक आमीर आदमी थे। अच्छे खाते पीते थे। अपने क़बीला में मुमताज़ हैसियत रखते थे। उनकी कोई पुत्र न थी। सिर्फ दो लड़कियां थीं और बीवी थी। चूँकि अभी तक आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर विरसा के बारे में कोई नए आदेश नाज़िल नहीं हुए थे और सहाबा में पुराने अरब के नियम के अनुसार, अरब का जो नियम था उस के अनुसार विरसा तक़सीम होता था। मुतवफ़्फ़ा यानी मरने वाला की पुत्र न होने की अवस्था में इस के बाप की तरफ से रिश्तेदार जो थे जायदाद पर क़ाबिज़ हो जाते थे और बेवा और लड़कियां यूँ ही ख़ाली हाथ रह जाती थीं। इसलिए सअद बिन रबी की शहादत पर उनके भाई ने सारे तर्के पर क़ब्ज़ा कर लिया और उन की बेवा और लड़कियां बिलकुल बेसहारा रह गईं। इस तकलीफ़ से परेशान हो कर सअद की बेवा अपनी दोनों लड़कियों को साथ लेकर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुईं और सारी बात सुना कर अपनी परेशानी का वर्णन किया। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की फ़ितरत सहीहा को इस दर्द के क़िस्सा ने एक ठेस लगाई मगर चूँकि अभी तक इस मामला में ख़ुदा की तरफ़ से आप पर कोई आदेश नाज़िल नहीं हुए थे आप ने फ़रमाया तुम इंतज़ार करो। फिर जो आदेश ख़ुदा की तरफ़ से नाज़िल होंगे उनके अनुसार फ़ैसला किया जाएगा। अत: आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस बारे में ध्यान फ़रमाया और अभी ज़्यादा वक़्त नहीं गुज़रा था कि आप पर विरसा के मामला में कुछ वे आयतें नाज़िल हुईं जो क़ुरआन शरीफ़ की सूरत अन्निसा में वर्णन हुई हैं। इस पर आप ने सअद के भाई को बुलाया और इस से फ़रमाया कि सअद के तरका में से दो तीसरा हिस्सा उनकी लड़कियों और एक आठवां अपनी भावजा के सपुर्द कर दो जो बाक़ी बचे वह ख़ुद ले लो। इस समय से तक़सीम विरसा के बारे में नए आदेशों की इब्तिदा क़ायम हो गई जिसकी दृष्टि से बीवी अपने साहिब औलाद पति के तरका में आठवें हिस्सा की और बेऔलाद ख़ावंद के तरका में चौठे हिस्सा की और लड़कियां अपने बाप के विरसा में अपने भाई के हिस्सा की तुलना में आधे हिस्सा की और अगर भाई न हो तो सारे तरका में से हालात के मतभेद के साथ तीसरा भाग या आधा की (तीन चौथाई या नसफ़ की, दो तिहाई या आधे की) और माँ अपने साहिब औलाद लड़के के विरसा में छटे हिस्सा की और बेऔलाद लड़के के तरका में तीसरे हिस्सा की हक़दार क़रार दी गई और इसी तरह दूसरे वरसा के हिस्से निर्धारित हो गए। और औरत का वह फ़ित्री हक़ जो इस से छीना जा चुका था उसे वापस मिल गया

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि ने आगे एक नोट लिखा है। वह लिखते हैं कि इस अवसर पर यह नोट भी ग़ैरज़रूरी नहीं होगा कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षा की विशेष विशेषताओं में से एक विशेषियत यह है कि आप ने स्त्री जाति के समस्त जायज़ और वाजिबी अधिकारों की पूरी पूरी हिफ़ाज़त फ़रमाई है बल्कि हक़ यह है कि दुनिया की तारीख़ में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पहले या आप के बाद कोई ऐसा शख़्स नहीं गुज़रा जिसने औरत के अधिकारों की ऐसी हिफ़ाज़त की हो जैसी आप ने की है। अत: विरसा में, ब्याह शादी में, पति पत्नी के सम्बन्धों में, तलाक़ तथा ख़ुला में, अपनी ज़ाती जायदाद पैदा करने के हक़ में, अपनी ज़ाती जायदाद के इस्तिमाल करने के हक़ में, शिक्षा के अधिकारों में, बच्चों की वलाएत तथा तरिबयत के अधिकारों में, क़ौमी और मुल्की मामलों में हिस्सा लेने के हक़ में, शख़्सी आज़ादी के मामलों में, देनी अधिकारों और ज़िम्मादारियों में सार यह कि धर्म तथा दुनया के हर उस मैदान में जिसमें औरत क़दम रख सकती है आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस के समस्त वाजिबी अधिकारों को स्वीकार किया है और इस के अधिकारों की हिफ़ाज़त को अपनी उम्मत के लिए एक मुक़द्दस अमानत और फ़र्ज़ के तौर पर क़रार दिया है। यही वजह है कि अरब की औरत आप की बिअसत को अपने लिए एक नजात का पैग़ाम समझती थी।

फिर आप लिखते हैं कि मुझे अपने रस्ता से हटना पड़ता है अर्थात विषय जो वर्णन हो रहा है इस से परे हट रहा हूँ। अगर मैं इस की और अधिक वर्णन करता तो हटना पड़ता वर्ना मैं बताता (क्योंकि यह औरतों के अधिकारों का विषय नहीं वर्णन हो रहा इसलिए वर्णन नहीं कर सकता कि औरत के मामलों में आप की शिक्षा वास्तव में इस उच्च स्थान पर क़ायम है जिस तक दुनिया का कोई मज़हब और कोई सभ्यता नहीं पहुंची और यक़ीनन आप का यह प्यारा कथन एक गहरी सच्चाई पर आधारित है कि حُبِّبَ اِلَیَّ مِنۡ دُنۡیَاکُمُ النِّسَاءُ وَالطِّیۡبُ وَجُعِلَتۡ قُرَّۃُ عَیۡنِیۡ فِی الصَّلٰوۃِ अर्थात दुनिया की चीज़ों में से मेरी फ़ितरत को जिन चीज़ों की मुहब्बत का ख़मीर दिया गया है वह औरत और ख़ुशबू हैं मगर मेरी आँखों की ठंडक नमाज़ अर्थात अल्लाह की इबादत में रखी गई है।

(उद्धरित सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन पृष्ठ 507 से 509)

आज की दुनिया औरत के अधिकारों की बात करती है और कुछ सतही बातों को उठा कर जिनका आज़ादी से कोई सम्बन्ध नहीं है बल्कि इस्लाम ने जो पाबंदियां लगाई हैं वह भी औरत की इज़्ज़त क़ायम करने और घरों के सुकून और अगली नस्ल की तर्बीयत के लिए रखी हैं उन पर इस्लाम पर एतराज़ करने वाले एतराज़ करते हैं जबकि हक़ीक़त यह है कि औरत की आज़ादी और अधिकारों दिलवाने की वास्तविक शिक्षा इस्लाम की ही है। अल्लाह करे कि दुनिया इस हक़ीक़त को समझ कर गन्दिगयों और फसादों से बच सके और हमारी औरतें भी इस हक़ीक़त को समझें। कई बार दुनिया के पीछे चल पड़ती हैं कि दुनिया की आज़ादी यह है। वह इस हक़ीक़त को समझें और जो स्थान इस्लाम ने औरत को दिया है इस को समझें क्योंकि वह न किसी मज़हब ने दिया है और न ही तथा कथित रोशन ख़्याल औरतों के अधिकारों की संस्थाओं ने दिया है या तहरीक ने दिया है। अल्लाह तआला मर्दों को भी औरतों के अधिकारों को अदा करने की इस्लामी शिक्षा के अनुसार तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए ताकि यह समाज पुर अमन समाज हो।

इस के बाद में संक्षिप्त में वर्तमान अवस्था के लिए भी दुआ के लिए कहना चाहता हूँ। दुआ करें कि अल्लाह तआला जहां कोरोना की महामारी से और आफ़तों से दुनिया को पाक करे वहां इन्सानों को यह अक़्ल और समझ भी दे कि उनकी बक़ा और बचत एक ख़ुदा की तरफ़ झुकने और एक दूसरे के अधिकारों अदा करने में है। अपनी क़ुर्बानी देते हुए दुनिया से फ़ित्ना तथा फ़साद ख़त्म करने में है। हुकूमतों को अल्लाह तआला अक़्ल दे कि इन्साफ़ पर आधारित निज़ाम चलाएं। अमरीका में भी आजकल जो बेचैनी और बदअमनी फैली हुई है इस से हर अहमदी को विशेष रूप से उस के बुरे प्रभावों से सुरक्षित रखे। वहां लोगों को भी सही रंग में अपनी मांग पेश करने और अधिकारों को लेने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए। अगर अफ्रीकन अमरीकन तोड़ फोड़ के द्वारा अपने घरों को जलाएँगे तो इस का नुक़्सान उनको ही होगा क्योंकि इस पर तो कई अफ्रीकन लीडरों ने भी कहा है कि अपने घरों को तो न जलाओ। अपने घरों की तोड़ फोड़ तो न करो। हाँ अपने हक़ लो और जायज़ तरीक़े से लो। जहां तक हुकूमत इजाज़त देती प्रोटेस्ट (protest) भी हों लेकिन अपनी जायदादों को तबाह करने का तो कोई फ़ायदा नहीं होगा। उल्टा नुक़्सान होगा। इसलिए इस बारे में भी प्रोटैस्ट करने वालों को सोचना चाहिए। बहरहाल यह जो सारे फ़सदा हो रहे हैं उस के परिप्रेक्ष्य में हुकूमती निज़ाम को भी यह समझ लेना चाहिए कि ताक़त इस्तिमाल कर के ही समस्याएँ हल नहीं होती और न ही ताक़त समस्त मस्लों का हल है बल्कि इन्साफ़ से समस्त शहरियों के अधिकार अदा करते हुए हुकूमतें चला करती हैं और देश में अमन और स्थिरता क़ायम हो सकता है, इस के बग़ैर नहीं। जितनी मर्ज़ी कोई ताक़तवर हुकूमत हो अगर अवाम में बेचैनी है तो कोई हुकूमत उस के सामने टिक नहीं सकती। बहरहाल अल्लाह करे कि दुनिया में जहां-जहां भी फ़साद हैं हर जगह फ़साद दूर हूँ और हुकूमतें अवाम के हक़ अदा करने वाली हों और अवाम अपने अधिकारों के लिए जायज़ हद तक हुकूमतों पर दबाओ डालने वाले हों।

इसी तरह पाकिस्तानी हुकूमत को भी सोचना चाहिए कि सिर्फ मुल्ला के ख़ौफ़ से आजकल अहमदियों पर जो ज़ुल्म और सख़्तियां बढ़ रही हैं वे न करें बल्कि इन्साफ़ से हुकूमत चलाएं। अपनी तारीख़ से सबक़ ले लें। अहमिदयत के मामले को लेकर या उस ईशू (issue) को लेकर और ज़ुल्म कर के न पहली हुकूमतों की हुकूमत क़ायम रह सकी है न भविष्य में किसी की रह सकेगी। इसलिए इस ख़्याल को छोड़ दें कि इस ईशू से हुकूमतों को लम्बा कर सकते हैं। हाँ इन ज़ुल्मों के नतीजे में दुनिया में अहमदियत की तरक़्क़ी पहले से बढ़कर हुई है और भविष्य में भी इंशा अल्लाह तआला होती रहेगी। यह ख़ुदा तआला का काम है और इस को कोई नहीं रोक सकता। बहरहाल हमारी दुआ है कि अल्लाह तआला हर जगह ज़ुल्म और फ़साद और बदअमनी को दूर फ़रमाए और जो महामारी आजकल फैली हुई है, बीमारी फैली हुई है इस में से इन्सान शिक्षा हासिल कर के अपनी हालतों में तब्दीलियां पैदा करे और हम अहमदियों को पहले से बढ़कर ख़ुदा तआला की इबादत का हक़ और इस के बंदों का हक़ अदा करने की तौफ़ीक़ मिले ताकि हम ज़्यादा से ज़्यादा अल्लाह तआला का प्यार हासिल करने वाले बन सकें और तरक्कियों को जल्दी से जल्दी अपने सामने होता हुआ देख सकें।

(अलफ़ज़ल इंटरनैशनल 26 जून 2020 ई पृष्ठ 5 से 9)

☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

स्थापित करने के लिए कोशिश कर रहे हैं। ह जमाअत अहमदिया के कामों पर मुबारक बाद प्रस्तुत करते हैं। हम जानते हैं कि इमाम जमाअत अहमदिया घाना में रहे हैं और वहां के ज़रई निज़ाम में बेहतरी लाने के लिए कामयाब तजुर्बे किए। हम आपको माली में भी तशरीफ़ लाने की दावत देते हैं। यह हमारे देश के लिए बहुत सम्मान की बात होगी। हम आपकी क़ीमती नसीहतों का इंतिज़ार कर रहे हैं।

इस के बाद आदरणीय आसिफ़ आरिफ़ साहिब नैशनल सेक्रेटरी उमूर ख़ारिजा फ्रांस ने अपना सम्बोधन प्रस्तुत करते हुए जमाअत का परिचय करवाया और मेहमानों को ख़ुश-आमदीद कहा।

इस के बाद वज़ारत दाख़िला फ्रांस के धर्मों के विभाग के एक डायरेक्टर Clment Rouchouse ने अपने सम्बोधन में कहा: मैं इमाम जमाअत अहमदिया को फ्रांस में ख़ुश-आमदीद कहता हूँ। हमारे देश फ्रांस में हर धर्म तथा जाति का स्वागत किया जाता है। फ्रांस के क़ानून के अनुसार हुकूमत धार्मिक उमूर में दख़ल अंदाज़ी नहीं करती। फ्रांस का इस्लाम के साथ एक लम्बा सम्बन्ध है। फ्रांस में बहुत से मुसलमान मौजूद हैं। 1924 ई से जमाअत अहमदिया यहां मौजूद है। आपकी पुरअमन शिक्षाओं की बहुत ज़रूरत है ताकि इस्लाम हमारी रियासत में अपनी स्थान बना ले। जमाअत अहमदिया फ्रांस के विभिन्न शहरों में सामाजिक कामों में सक्रिय है। अमन, भाईचारा, धर्मों के मध्य में वार्तालाप के लिए जमाअत अहमदिया काफ़ी काम कर रही है। इस बारे में मैं वज़ारत दाख़िला की तरफ़ से मुबारकबाद प्रस्तुत करता हूँ। हम आप के साथ हैं।

इस के बाद मिनिस्ट्री आफ़ यूरोप और फ़ौरन अफेयर्ज़ में धार्मिक उमूर के कौंसिलर मुशीर विशेष Jean – Christophe Auge ने अपना सम्बोधन प्रस्तुत करते हुए कहा:मैं इमाम जमाअत अहमदिया को फ्रांस में ख़ुश-आमदीद कहता हूँ। मैं इस आयोजन के प्रबन्धकों का शुक्रिया अदा करता हूँ। हम इमाम जमाअत अहमदिया की विश्वव्यापी इच्छाओं से अच्छी तरह परिचित हैं और आपकी जमाअत को भी जानते हैं। फ्रांस की हुकूमत आज़ादी राय और आज़ादी धर्म का दिफ़ा करती है। हमारी इच्छा है कि इमाम जमाअत अहमदिया का दौरा फ्रांस सफल हो।

इस के बाद Eaubonne क्षेत्र के मेयर Gregoire Dublineau ने अपने सम्बोधन में कहा:मैं जमाअत अहमदिया फ्रांस की कोशिशों की प्रशंसा करता हूँ। इस जमाअत के मैंबर्ज़ हर सतह पर हमारी मदद करते हैं। वह प्यार, मुहब्बत और भाईचारा बांट रहे हैं। आपके कामों की वजह से लोगों के मुसलमानों के बारे में शंकाएं दूर हो रही हैं और लोग इस्लाम के बारे में और अधिक ज्ञान प्राप्त करने की तलाश कर रहे हैं।

इस के बाद नेटो मैमोरियल के सदर Willy Breton ने अपना सम्बोधन प्रस्तुत करते हुए कहा: हर साल हम अपने आयोजन के लिए फ्रांस के विभिन्न धर्मों के नुमाइंदों को दावत देते हैं। हम जमाअत अहमदिया का शुक्रिया अदा करते हैं। विशेषकर इमाम जमाअत अहमदिया के बहुत शुक्रगुज़ार हैं कि आप इस आयोजन में शामिल हुए। हमारे आयोजनों में जमाअत अहमदिया शामिल होती है और वफ़ात पाने वाले फ़ौजियों के लिए और उनके रिश्तेदारों के लिए दुआ करते हैं। मेरा पैग़ाम है कि हम सब मिलकर अमन के लिए कोशिश करें।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने 6 बजकर 40 मिनट पर अंग्रेज़ी भाषा में ख़िताब फ़रमाया जिसका हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत है

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का ज्ञान वर्धक ख़िताब

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने बिस्मिल्लाह हिर्रह-मानिर्हीम से ख़िताब का आरम्भ फ़रमाया। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया

मेहमानान किराम,अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाह व बरकातहो!सबसे पहले में UNESCO की इंतिज़ामीया का शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ कि उन्होंने आज हमें यहां इस प्रोग्राम के आयोजन की आज्ञा दी। इसी तरह मैं समस्त सम्मान-नीय मेहमानों का भी शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ जो हमारी दावत स्वीकार करते हुए आज यहां एक ऐसे शख़्स की तक़रीर सुनने के लिए इकट्ठे हुए हैं जो कि न तो सियास्तदान है , न कोई राजनीतिक लीडर और न ही कोई साईंसदान, बल्कि एक धार्मिक जमाअत अर्थात अहमदिया मुस्लिम कम्यूनिटी का लीडर है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया

UNESCO के बुनियादी उद्देश्य बहुत उत्तम और प्रशंसा योग्य हैं। मेरे ज्ञान के अनुसार उस के उद्देश्य में पूरी दुनिया में अमन और आपसी इज़्ज़त तथा सम्मान की स्थापना, क़ानून और इन्सानी अधिकार की निगरानी और शिक्षा को बढ़ावा देना शामिल हैं।UNESCO आज़ादी सहाफ़त और विभिन्न विरसों और सभ्यताओं की हिफ़ाज़त को भी बढ़ावा देती है। इसके उद्देश्य में ग़रीबी का ख़ातमा और विश्वव्यापी स्तर पर स्थायी तरक़्क़ी को बढ़ावा देना भी शामिल फिर UNESCO इस बात को भी यक़ीनी बनाने की कोशिश करती है कि इन्सान अपने पीछे ऐसा विरसा छोड़कर जाए जिससे आने वाली नस्लें लाभान्वित होती रहीं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया आपको शायद यह जान कर हैरत होगी कि इस्लामी शिक्षाएं भी मुसलमानों से इन्हीं उद्देश्य को पूरा करने और इन्सानी तरक़्क़ी के लिए निरन्तर कोशिशों में लगे रहने की मांग करती हैं। इस किस्म की ख़िदमतों की बुनियाद क़ुरआन करीम की पहली सूरत पर ही है जिसमें वर्णित है कि अल्लाह तआला समस्त जहानों का रब है। यह आयत इस्लामी अक़ीदों का बिन्दु है जिसके द्वारा मुसलमानों को बताया गया है कि अल्लाह तआला सिर्फ़ उनका ही रब और राज़िक़ नहीं बल्कि समस्त मानव जाति का भी वही रब और राज़िक़ है। वह रहमान और रहीम है। अत: वह बिना भेद रंग तथा नस्ल और ज़ात के अपनी समस्त मख़लूक़ की ज़रूरतें पूरी करने वाला है। अत: उसके सम्मुख वास्तविक मुसलमान इस बात पर दृढ़ यक़ीन रखते हैं कि समस्त मानव जाति बराबर पैदा हुई हैं। अत: अक़ीदों के मतभेदों को छोड़ते हुए आपसी इज़्ज़त तथा सम्मान और सहनशीलता जैसी इक़दार समाज की बुनियाद होनी चाहिऐं। सूर अलबकर की नम्बर 139 में एक बहुत ख़ूबसूरत नियम वर्णन हुआ है कि मुसलमानों को अल्लाह तआला की राह पर क़दम मारने चाहिऐं और उसके गुणों को अपनाना चाहिए। जैसा कि वर्णन हो चुका है कि अल्लाह तआला की रहमत हर चीज़ पर छायी हुई है और वे समस्त लोगों का राज़िक़ और प्रदान करने वाला है, यहां तक कि उनका भी जो उस के वजूद के इन्कारी हैं। अल्लाह तआला का रहम तथा करम उन पर भी रहता है जो उसके ख़िलाफ़ अपशब्द बोलते रहते हैं या दुनिया में अत्याचार करते रहते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया इस्लाम में ख़ुदा की तरफ़ से निर्धारित जज़ा तथा सज़ा का सम्बन्ध आख़िरत के साथ अधिक है जबकि इस ज़िन्दगी में तो अल्लाह तआला दुनिया पर अपने रहम तथा करम का इज़हार फ़रमाता चला जा रहा है। अल्लाह तआला ने मुसलमानों को अपने गुणों को अपनाने की शिक्षा देकर यह बताया है कि वे भी दूसरे लोगों के साथ रहम और हमदर्दी से व्यवहार करें। अत: मुसलमानों का यह धार्मिक कर्त्वय है कि वे अक़ीदों, तहज़ीब और रंग तथा नस्ल के मतभेदों को पीछे डालते हुए हमेशा दूसरों की ज़रूरतों को पूरी करें और उनसे हमेशा हमदर्दी का सुलूक करें और उनकी भावनाओं का एहसास करें। और अधिक यह कि क़ुरआन करीम ने यह भी दावा किया कि अल्लाह तआला नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को समस्त मानव जाति के लिए रहमत बना कर भेजा।आप हमदर्दी की इन इस्लामी शिक्षाओं का अनुकरणीय नमूना थे। जब आप ने धर्म "इस्लाम' की बुनियाद रखी तो उस के बाद आप और दूसरे मुसलमानों को मक्का के ग़ैरमुस्लिमों की तरफ़ से अत्याचारपूर्ण विरोध का सामना करना है जिसे आप ने निहायत सब्र और धैर्य के साथ बर्दाश्त किया। अन्त में जब ज़ुलम तथा अत्याचार सीमा से बढ़ गए तो वह मदीना की तरफ़ हिजरत कर गए। रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुहाजिरीन, यहूद और अन्य जातियों के बाशिंदों के मध्य अमन का मुआहिदा तय करवाया। इस मुआहिदा के अनुसार विभिन्न जातियों ने अमन के साथ रहने, दूसरों के अधिकार का ध्यान रखने और आपसी हमदर्दी, सहयोग और धैर्य को बढ़ावा देने का अहद किया। रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम रियासत के वाली निर्धारित हुए और उनकी क़ियादत में यह मुआहिदा इन्सानी अधिकार और हुक्मरानी का एक शानदार चार्टर साबित हुआ और उसने विभिन्न क़ौमों के मध्य अमन को यक़ीनी बनाया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया पैग़म्बर इस्लाम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने झगड़ों के हल करने के लिए पक्षपात रहित इन्साफ का निज़ाम स्थापित फ़रमाया। आपने यह स्पष्ट फ़रमाया कि अमीर और ताक़तवर , इसी तरह ग़रीब और असहाय लोगों, सब के लिए एक ही क़ानून होगा और सबसे इस रियास्ती क़ानून के अनुसार ही सुलूक किया जाएगा। उदाहरण के तौर पर एक बार एक प्रभाव रखने वाली वाली औरत ने एक जुर्म किया और बहुत से लोगों ने यह परामर्श दिया कि इस का जुर्म नज़रअंदाज कर दिया रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस तजवीज़ को रद्द फ़रमाया और यह वज़ाहत की कि अगर मेरी बेटी भी जुर्म करती तो उनको भी रियाइत न मिलती और क़ानून के अनुसार सज़ा मिलती।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया और अधिक यह कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बहुत ही उच्च शिक्षा का निज़ाम भी स्थापित फ़रमाया जिसके द्वारा से इस समाज में रोशन ख़्याली के स्तर ऊंचा हो गए। शिक्षा प्राप्त और पढ़े लिखे लोगों को हिदायत की गई कि वे अनपढ़ लोगों को शिक्षा दें। समाज में यतीमों और कमज़ोरों की शिक्षा के लिए विशेष प्रबन्ध किए गए। यह सब इसलिए किया गया ताकि कमज़ोर और नादार लोग अपने पांव पर खड़े हो सकें और आगे बढ़ सकें। टैक्स का निज़ाम भी स्थापित किया गया जिससे समाज के अमीर लोगों से टैक्स लिया जाता था और समाज के ग़रीब लोगों पर ख़र्च किया था।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया क़ुरआन करीम की शिक्षाओं के अनुसार व्यापार के भी नियम स्थापित फ़रमायाता कि इस बात को यक़ीनी बनाया जा सके कि व्यापार इन्साफ़ और ईमानदारी से हो रही है। इस ज़माना में जब कि ग़ुलामी का दौर दौरा था और आक़ा अपने ग़ुलामों से निहायत बेरहमी का सुलूक करते थे , पैग़ंबर इस्लाम ने इस वक़्त समाज में इन्क़िलाब बरपा कर दिया। आक़ाओं को हुक्म दिया गया कि ग़ुलामों से हमदर्दी और इज़्ज़त का सुलूक करें और रसूल करीम सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम ने कई बार उन्हें आज़ाद करने की भी परज़ोर ध्यान दिलाया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया:इसी तरह रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के नेतृत्व में अवाम की सेहत की सुरक्षा का निज़ाम भी स्थापित किया गया। शहर की सफाई सुथराई का प्रोग्राम मुरत्तिब किया गया और लोगों को ज़ाती सफाई और सेहत की सुरक्षा के बारे में भी शिक्षा दी गई। शहर की सड़कें खुली और बेहतर की गईं। शहरियों की ज़रूरतों का निर्धारण करने और अन्य मालूमात इकट्ठी करने के लिए लोगों की गिनती की गई। अत: सातवीं सदी में पैग़म्बर इस्लाम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हुकूमत के अधीन मदीना में व्यक्तिगत और सामूहिक अधिकार में बेहतरी लाने के लिए हैरान करने वाले काम किए गए। अवश्य अरबों में पहली बार नियमित मुहज़्ज़ब और मुनज़्ज़म समाज की स्थापना हुई । यह समाज कई लिहाज़ से उदाहरण योग्य था। जैसे इनफ़रास्टर कचर, ख़िदमात और सबसे बढ़कर इस कई सभ्यताओं वाले समाज में इत्तिहाद और धैर्य का मुज़ाहरा था। मुसलमान वहां मुहाजिरीन के तौर पर आए थे लेकिन फिर भी स्थानीय समाज में शाहिल हो गए और वहां की कामयाबी और तरक़्क़ी में अपनी भूमिका डाली।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया परन्तु यह

अल्लाह तआला का उपदेश

رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ (आले इम्रान 17)

हे हमारे रब्ब निसन्देह हम ईमान ले आए

अतः हमारे गुनाह माफ कर दे और हमें आग के अज़ाब से बचा।

तालिबे दुआ

MUHAMMAD MAJEED AND FAMILY

AMEER DIST: ROUPR. PUNJAB

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY,

JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

बहुत दुख की बात है कि इन इस्लामी शिक्षाओं की रोशनी में भी आजकल की दुनिया में इस्लाम के पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तस्वीर ख़राब की जा रही है। उन्हें एक जंगी लीडर के तौर पर प्रस्तुत किया जा रहा है जिसका हक़ीक़त से कोई लेना देना नहीं है। बल्कि वास्तव में रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी ज़िन्दगी का हर क्षण दूसरों के अधिकार की सुरक्षा में गुज़ारा और इस्लामी शिक्षाओं के द्वारा इन्सानी अधिकार के बेनज़ीर और स्थायी नियामली की स्थापना हुई जैसे आप ने शिक्षा दी कि लोग एक दूसरे के अक़ीदों और भावनाओं का ध्यान रखें और दूसरों की पवित्र हस्तीयों की आलोचना करने से रुक जाएं।

एक बार एक यहूदी ने आया आप के एक क़रीबी सहाबी के बारे में शिकायत की। इस पर रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इन सहाबी को बुलाया और इस बारे में पूछा। सहाबी ने निवेदन किया कि वह यहूदी कह रहा था कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर फ़ौक़ियत रखते हैं और यह बात मुझ से बर्दाश्त नहीं हुई तो मैंने सख़्ती से इस का जवाब दिया कि नहीं !रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सम्मान अधिक ऊंचा है। इस पर रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने क़रीब तरीन साथी के साथ नाराज़गी का इज़हार फ़रमाया और फ़रमाया कि आपको इस यहूदी से बेहस नहीं करनी चाहिए थी बल्कि उस की धार्मिक भावनाओं का सम्मान करना चाहिए था। यह थीं आप की अनुपमीय शिक्षाएं और मेरे विचार में यह निहायत अफ़सोस योग्य बात है कि आपसी इज़्ज़त तथा सम्मान के बुनियादी उसूल, जो कि मुहब्बत और इत्तिहाद के स्थापना का दरवाज़ा हैं, इस को वर्तमान युग में तथा कथित आज़ादी और तफ़रीह के नाम पर क़ुर्बान कर दिया गया है यहां तक कि धर्मों के संस्तापकों को भी हंसी, ठट्ठा और उपहास से मुक्त नहीं रखा गया। बावजूद इस के कि इन अंबिया पर उपहास उनके करोड़ों अनुयायियों के ग़म तथा ग़ुस्सा का वाला बनाता है। दूसरी तरफ़ क़ुरआन करीम इस सीमा तक शिक्षा देता है कि दूसरों के बुतों को भी बुरा न कहें क्योंकि उनको तकलीफ़ होगी। इसी तरह यह कि नतीजा में वे ख़ुदा को भी बुरा कहेंगे और इस के नतीजे में समाज का अमन और एकता प्रभावित होगी।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया ग़रीब और असहाय लोगों के अधिकार पूरा करने के हवाला से रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने विभिन्न स्कीमों और मन्सूबों का आरम्भ किया ताकि उनका समामाजिक रहन सहन बेहतर हो और वे अपने सम्मान से वंचित न रहें। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि लोग अक्सर ऐसे लोगों को सम्मान देते हैं जो अमीर और ताक़तवर हों लेकिन एक ग़रीब शख़्स जो कि आचरण वाला और अच्छे व्यवहार वाला है वह इस अमीर शख़्स से कहीं बेहतर है जो दूसरों के भावनाओं का ध्यान नहीं रखता और केवल अपना ही ध्यान रखता है।

छोटे छोटे मामलों में भी रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस बात का विशेष ध्यान रखते कि कुचले हुए लोगों की भावनाएं ज़ख्मी न हों। उदाहरण के पर आप ने मुसलमानों को हिदायत फ़रमाई कि अपने इज्तिमाआत और खाने की दावतों में हमेशा ग़रीब और ज़रूरतमंद लोगों को बुलाया करें। अगर अमीर और ताक़तवर लोग ग़रीबों का शोषण करते तो आप अपने सहाबा से फ़रमाते कि कमज़ोर लोगों को इन्साफ़ दिलाने में उनकी मदद करें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमेशा ग़ुलामी को ख़त्म करने की कोशिश की। आप ने अपने अनुयायियों को बार-बार नसीहत फ़रमाई कि वे अपने ग़ुलामों को आज़ाद करें। आप ने फ़रमाया कि अगर फ़ौरी तौर पर आप अपने ग़ुलामों को आज़ाद नहीं कर सकते तो कम से कम उनके ओढ़ने और खाने का इसी तरह ध्यान रखें जैसा कि आप अपना रखते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया एक और विषय जो प्राय उठाया जाता है वह औरतों के अधिकार का है, अर्थात इस्लाम औरतों के अधिकार अदा नहीं करता। इस का हक़ीक़त से दूर दूर का सम्बन्ध नहीं। बल्कि इस्लाम ने ही तो सबसे पहले औरतों और लड़कियों के अधिकार स्थापित फ़रमाए और इस दौर में यह अधिकार स्थापित फ़रमाए जब औरतों और लड़कियों के साथ भेदभाव वाला सुलूक किया जाता था और उन्हें हीनता की नज़र से देखा जाता था। इस्लाम के पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने अनुयायियों को हिदायत की कि वे इस बात को यक़ीनी बनाएँ कि औरतों को शिक्षा दी जाए और उनकी इज़्ज़त तथा सम्मान किया जाए। यहां तक फ़रमाया कि अगर किसी शख़्स की तीन बेटियां हों और वे उन्हें शिक्षा दिलाए और सीधे रास्ता पर चलाए तो उस के लिए जन्नत की बशारत है। यह बात तो उन उग्रवादियों के दावा के विपरीत है जो कहते हैं कि जिहाद और ग़ैर मुसलमानों को क़तल करने से इन्सान जन्नत में चला जाएगा। इस्लाम के पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तो यह बात सिखाई कि जन्नत में जाने का रस्ता लड़कियों को शिक्षा देने और अख़लाक़ी इक़दार सिखाने में है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया इन्ही शिक्षाओं की कारण दुनिया भर में अहमदी मुसलमान लड़कियों को शिक्षा दिलवाई जाती है और वे विभिन्न मैदानों में उच्च काम का प्रदर्शन कर रही हैं। हमारी बच्चियां डाक्टर बन रही हैं, उस्ताद बन रही हैं, आर्कीटेक्ट बन रही हैं और अन्य विभागों में जा रही हैं और इस तरह इन्सानियत की सेवा कर रही हैं। हम इस बात का विश्वास दिलाते हैं कि लड़कियों और लड़कों दोनों को शिक्षा के बराबर अवसर मिलें। अत: दुनिया के तरक़्क़ी वाले देशों में अहमदी मुसलमान लड़कियों की शिक्षा का अनुपात कम से कम 99 प्रतिशत है।

हुज़ूर अनवर उदय अल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया फिर रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पड़ोसियों के अधिकार पर बहुत ज़ोर दिया। आप ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने पड़ोसियों के अधिकार की इस क़दर ताकीद की कि मुझे लगा कि शायद पड़ोसियों को विरासत के अधिकार मिल जाऐंगे। अत: रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने रंग तथा नस्ल और ज़ात पात को हटा कर रखकर विश्वव्यापी इन्सानी अधिकार की स्थापना फ़रमाई। मैंने अभी ज़िक्र किया है कि किस तरह रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने शिक्षा के महत्त्व पर ज़ोर दिया। इस का एक उदाहरण इस्लामी तारीख़ की पहली जंग के बाद मिलता है। मुसलमानों ने सामान की कमी के बावजूद अल्लाह तआला की समर्थन तथा सहायता से अपने से कहीं अधिक ताक़तवर मक्का वालों को पराजित दी। इस के बाद रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पढ़े लिखे जंगी क़ैदीयों को इस शर्त पर आज़ाद करने की पेशकश की कि वे समाज के अनपढ़ लोगों को पढ़ना लिखना सिखा दें। अत: इस तरह कई सदियों पहले इस्लाम के पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क़ैदीयों के सुधार और उन्हें समाज का मुफ़ीद वजूद बनाने का कामयाब नमूना स्थापित फ़रमाया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया प्राय यह एतराज़ किया जाता है कि इस्लाम जंग तथा झगड़ों का धर्म है मगर हक़ीक़त यह है जो क़ुरआन करीम में भी वर्णन हुई है कि मुसलमानों को प्रतिरक्षात्मक जंग करने की आज्ञा सिर्फ इसलिए दी गई ताकि समस्त मानव जाति के लिए धर्म की आज़ादी और बुद्धि की आज़ाद स्थापित की जाए और उसकी सुरक्षा की जाए। क़ुरआन करीम वर्णन फ़रमाता है कि अगर मुसलमान मक्का के कुफ़्फ़ार की फ़ौज का मुक़ाबला न करते तो कोई भी कलीसा, गिरजाघर, मंदिर, मस्जिद या किसी भी धर्म की इबादत गाए महफ़ूज़ न रहती क्योंकि विरोधी तो हर किस्म के धर्म को ख़त्म करने के लिए तैय्यार थे। दरअसल अव्वलीन मुसलमानों ने अगर जंगों में हिस्सा लिया तो वे प्रतिरक्षात्मक जंगें थीं और वे जंगें स्थायी अमन की स्थापना और लोगों

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उस के रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

के आज़ादी से जीने के हक़ की हिफ़ाज़त के लिए लड़ी गई थीं। अगर आजकल कई ऐसे मुसलमान हैं जो उग्रवाद के तरीके अपनाते हैं या जो जंग तथा झगड़ों की शिक्षा देते हैं तो इस का कारण यही है कि वे इस्लामी शिक्षाओं को भुला चुके हैं या उन शिक्षाओं से बिलकुल अज्ञान हैं। जहां कहीं भी लोग या कई ग्रुप दहश्तगर्दी का मुज़ाहरा करते हैं तो उनका उद्देश्य ताक़त तथा दौलत का हासिल करना होता है। इसी तरह वे देश जो कि अन्यायपूर्ण और इंतिहा पसंदाना पालिसीयां इख़तियार करते हैं उस के पीछे उनके उद्देश्य भौगोलिक लाभ और दूसरों पर अपनी ताक़त का इज़हार होता है। ऐसे लोगों की हरकत का इस्लाम से कोई भी सम्बन्ध नहीं। इस्लाम ने मुसलमानों को फ़ित्ना तथा फ़साद से मना किया है। इसीलिए न तो रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और न ही आपके ख़ुलफ़ाए राशदीन ने जंगें शुरू कीं बल्कि हमेशा अमन और सुलह के इच्छु रहे बल्कि इस राह में बेशुमार क़ुर्बानियां भी दीं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कई आलोचना करने वालों की तरफ़ से इस्लाम पर एक इल्ज़ाम यह भी लगाया जाता है कि इस्लाम एक पुरानी और पिछड़ा धर्म है या एक ऐसा धर्म है जो कि रोशन ख़्याली को बढ़ावा नहीं देता। यह एक बेवकूफ़ाना और द्वेष से भरी हुई सोच है जिसकी बुनियाद हक़ीक़त की बजाय कहानियों पर है। यह एक बे-बुनियाद इल्ज़ाम है। क़ुरआन करीम ने अपने आप यह दुआ सिखा कर शिक्षा का महत्त्व वर्णन फ़रमाया है कि"ए मेरे रब मेरे इलम में इज़ाफ़ा फ़र्मा।' जहां यह दुआ मुसलमानों के लिए मदद प्राप्त करने का एक माध्यम है वहां यह दुआ मुसलमानों को इलम प्राप्त करने और इस में और अधिक तरक़्क़ी करने की तरग़ीब दिलाती है। हक़ीक़त यह है कि मध्य युग के मुसलमान मुफ़क्किरों, फ़लसफ़ियों और धर्म की तहक़ीक़ात क़ुरआन करीम, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षाओं से प्रभावित हो कर ही की हैं

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया अगर आप हज़ार साल पहले की तारीख़ पर नज़र डालें तो हम देखते हैं कि किस तरह मुसलमान आविष्कारकों और साईंसदानों ने ज्ञान को बढ़ावा देने में एक अहम भूमिका अदा की और ऐसी तकनीकें ईजाद कीं जिन्होंने दुनिया ही बदल दी और यह तकनीकें आज भी प्रयोग की जा रही हैं। उदाहरण के तौर पर इब्न हैशम ने पहला कैमरा ईजाद किया और UNESCO ने भी यह स्वीकार किया है जहां उसे जदीद optics (इलम बसरयात) का संस्थापक कहा गया है। यह भी एक दिलचस्प हक़ीक़त है कि शब्द कैमरा भी अरबी लफ़्ज़ कमर से निकला है। बारहवीं सदी में एक मुसलमान नक़्शा निगार ने मध्य युग का दुनिया का सबसे तफ़सीली और सही नक़्शा प्रस्तुत किया जो कि कई सदियों तक भ्रमणकारी के प्रयोगि करते रहे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया फिर वैद्य के क्षेत्र में भी मुसलमान तबीबों और साईंसदानों ने कई खोजें कीं और बहुत सी ऐसी ईजादें कीं जो आजकल भी प्रयोग की जा रही हैं। कई आपरेशन के कई पुर्ज़े मुसलमान तबीब अलज़हरवी ने दसवीं सदी में बनाए। सत्रहवीं सदी में एक अंग्रेज़ तबीब विलियम हार्वे (William Harvey) ने ख़ून की गर्दिश और दिल किस तरह काम करता है इस पर एक अहम तहक़ीक़ प्रस्तुत की और उसकी बहुत मशहूरी हुई। परन्तु यह बात बाद में आई कि 4 सौ साल पहले एक अरब तबीब इब्न नफ़ीस अरबी भाषा में ख़ून की बुनियादी गर्दिश के बारे में तफ़सील प्रस्तुत कर चुका था। नौवीं सदी में जाबिर पुत्र हय्यान ने कैमिस्ट्री में इन्क़िलाब बरपा कर दिया। उसने बहुत से ऐसे काम और औज़ार प्रस्तुत किए, जो कि आज भी प्रयोग हो रहे हैं। अलजबरा का और trigonometry की अक्सर तफ़सील सबसे पहले एक मुसलमान ने प्रस्तुत की। जदीद दुनिया में कम्पयूटर टैक्नोलोजी में algorithms का बहुत योगदान है और यह भी पहले मुसलमानों ने प्रस्तुत किए। ज़हनी इर्तिक़ा में मुसलमानों की ख़िदमतों को आज भी स्वीकार किया जाता है। उदाहरण के तौर पर न्यूयार्क टाईम्स में साईंस रिपोर्टर Denis O'Brien का एक निबन्ध प्रकाशित हुआ। उसने एक मुसलमान अलतोसी जो कि कई उलूम के माहिर थे उनकी भूमिका का ज़िक्र किया। लेखक ने अलतोसी की इलम फ़लकियात, इलमुल-अख़्लाक़, हिसाब और फ़लसफ़ा के हवाला से कई कामों का ज़िक्र किया और उसे अपने दौर का बेहतरीन दार्शनिक क़रार दिया। यह लिखता है कि मुसलमानों ने मध्य युग में ऐसा समाज स्थापित किया जो कि दुनिया में साईंस का केन्द्र था। इलम और साईंस के लिए अरबी 5 सौ साल तक केन्द्रीय भाषा रही। यह एक सुनहरी दौर था जो आजकल की जदीद यूनीवर्सिटीयों के लिए प्रस्तावना साबित हुआ। अत: आरम्भ से ही इस्लाम ने इन्सानी इलम बढ़ाने और इलम प्राप्त करने पर बहुत ज़ोर दिया है

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया अहमदिया मुस्लिम जमाअत की स्थापना 1889 ई में हुई। अहमदिया जमाअत ने हमेशा जमाअत के लोगों को इलम प्राप्त करने की तरफ़ तवज्जा दिलाई है। अल्लाह के फ़ज़ल से सबसे पहले मुसलमान नोबेल ईनाम पाने वाले साईंसदान प्रोफ़ैसर डाक्टर अब्दुस्सलाम एक अहमदी थे। यह एक मशहूर साईंसदान थे जिन्होंने 1979 ई में फिज़िक्स में नोबल इनाम प्राप्त किया। प्रोफ़ैसर अब्दुस्सलाम सारी उम्र इस बात का इज़हार करते रहे कि किस तरह उनकी तहक़ीक़ात के पीछे इस्लाम और विशेष रूप से क़ुरआन करीम का फ़ैज़ और रोशनी काम कर रही थी। आप कहा करते थे कि क़ुरआन करीम की 750 आयतें साईंस से सम्बन्धित हैं, जिनसे हमें क़ुदरत और कायनात को समझने में मदद मिलती है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया और अधिक यह कि अहमदिया जमाअत के तीसरे ख़लीफ़ा ने अज़ीम मुसलमान साईंसदानों और स्कालर्ज़ की एक नई सुबह तलूअ होने की इच्छा का इज़हार किया और अपनी जमाअत में इलमी मैदान में उच्च सफलता प्राप्त करने वालों को गोल्ड मैडल दिए जाने की रिवायत का आरम्भ किया। अत: हर साल सैंकड़ों अहमदी मुसलमान लड़कों और लड़कियों को गोल्ड मैडल दिए जाते हैं। हम समझते हैं कि ग़ुर्बत के चक्कर को, जिसने सामाजिक तौर पर पिछड़े देशों को एक नस्ल के बाद दूसरी नस्ल में जकड़ा हुआ है, ख़त्म करने के लिए शिक्षा उपलब्ध करना बहुत ज़रूरी है

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया हमें यह शिक्षा रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दी है जिसमें आपने बताया कि रुहानी तरक़्क़ी का इन्सानियत की सेवा के साथ एक गहरा सम्बन्ध है और एक मुसलमान सिर्फ़ अल्लाह तआला की इबादात और नमाज़ों के द्वारा अल्लाह तआला की रज़ा प्राप्त नहीं कर सकता बल्कि अल्लाह तआला की प्रसन्नता का चाहना मुसलमानों से मांग करता है कि वे इन्सानियत की भी सेवा करें। अत: क़ुरआन करीम की सूर अल-बलद आयात 15 से17 में मुसलमानों को ग़ुर्बत और भूक ख़त्म करने,यतीमों की ज़रूरीयात पूरी करने और असहायों और ग़रीब बच्चों को शिक्षा प्रस्तुत करने का हुक्म दिया गया है ताकि इन लोगों को भी फलने फूलने के अवसर मिलें। अहमदिया मुस्लिम जमाअत दुनिया-भर में इन्हीं उच्च शिक्षाओं पर यथा सामर्थय अनुकरण कर रही है। हमारा ईमान है कि इस्लाम प्यार और मुहब्बत का धर्म है। अत: हम धर्म तथा नस्ल का भेद किए बिना इन्सानियत की सेवा कर रहे हैं। इसी वजह से अफ़्रीक़ा के ग़ुरीब और दूर दराज़ के इलाक़ों में हमने प्राइमरी और सैकण्डरी स्कूलों की स्थापना की है और उन इलाक़ों में हम ने हस्पताल और क्लीनिक भी खोले हैं। दूर दराज़ के देहातों में हम पीने का साफ़ पानी उपलब्ध कर रहे हैं जिसका मतलब है कि उनके बच्चे सारा दिन मीलों दूरी तय कर के घरेलू प्रयोग

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 5 Thursday 9 July 2020 Issue No.28

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

के लिए तालाबों से पानी भर कर लाने की बजाय आज़ादी से स्कूल जा सकते हैं

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ने फ़रमाया हम ने मॉडल वेलेज्ज़ बनाने के मन्सूबे भी शुरू किए हैं जिनमें कम्यूनिटी हालों से लेकर साफ़ पानी, सूर्ज के प्रकाश, इनफ़रास्ट्रक्चर और अन्य कई सुविधाएं उपलब्ध की जाती हैं। यह समस्त सहूलयात जो स्थानीय लोगों को बिना किसी रंग तथा नस्ल के अन्तर और धर्म के उपलब्ध की जाती हैं इस का करवाने वाला हमारा धर्म ही है

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया जहां हम इन्सानी हमदर्दी की बुनियाद पर ग़रीबी के ख़ात्मा के लिए कोशिश कर रहे हैं वहां हम यह भी समझते हैं कि यह चीज़ दुनिया में स्थायी अमन के स्थापना के लिए एक कुंजी की हैसियत रखती है। अगर लोगों के पास खाने के लिए ख़ुराक, पीने के लिए पानी, रहने के लिए स्थान, बच्चों के लिए स्कूल और तिब्बी सुविधाएं उपलब्ध हों तो लोग पुरअमन तौर पर अपनी ज़िन्दगियां गुज़ार पाएँगे और मायूसी और नफ़रत की हलाक करने वाली पकड़ जो कि उन्हें शिद्दत पसंदी की तरफ़ ले जाती है इस से बच जाऐंगे। यह बुनियादी इन्सानी अधिकार हैं। अत: जब तक हम लोगों की जानें ग़रीबा से न छुड़ा दें, हम इस दुनिया में वास्तविक अमन नहीं देख पाएँगे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया आख़िर में मेरी दिली दुआ है कि मानव जाति लालच और स्वार्थों का पीछा छोड़कर इस दुनिया में तकलीफ़ वाले लोगों की तकलीफ़ों को दूर करने पर तवज्जा दे। इन शब्दों के साथ मैं एक बार फिर आप सब का आज शाम यहां तशरीफ़ लाने पर शुक्रिया अदा करना चाहूँगा। बहुत शुक्रिया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का यह ख़िताब 7 बजकर 15 मिनट तक जारी रहा। आख़िर पर हुज़ूर अनवर ने दुआ करवाई

हुज़ूर अनवर के ख़िताब के बाद मेहमान बहुत देर तक तालियाँ बजाते रहे। इस के बाद मेहमानों ने बारी बारी हुज़ूर अनवर के पास आ कर तस्वीरें बनवाईं और हाथ मिलाने का सौभाग्य भी प्राप्त किया। हुज़ूर अनवर मेहमानों से गुफ़्तगु फ़रमाते रहे।

इस आयोजन के बाद मेहमानों के लिए रेफ़रेशमंट का प्रबन्ध किया गया था। हुज़ूर अनवर भी इस क्षेत्र में तशरीफ लाए, यहां भी मेहमान हुज़ूर अनवर के पास आते रहे और तस्वीरें बनवाते और हुज़ूर अनवर उनसे विभिन्न मामलों पर गुफ़्तगु फ़रमाते रहे। यहां आधा घंटा तक हुज़ूर अनवर मेहमानों में मौजूद रहे।

8 बजे यहां से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ वापस मिशन हाऊस दारुस्सलाम (Saint Prix) के लिए रवाना हुए और लगभग 45 मिनट के सफ़र के बाद 8 बजकर 45 मिनट परमिशन हाऊस तशरीफ़ हुई। 9 बजकर 10 मिनट पर हुज़ूर अनवर ने मस्जिद मुबारक में तशरीफ़ लाकर नमाज़ मग़रिब इशा जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए

☆ ☆
☆

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण का नमूना दिखाओ तब अलबत्ता सफल हो जाओगे।"

तालिबे दुआ

धानू शेरपा

सैक्रेट्ररी जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

पृष्ठ 1 का शेष

लोग दुआ कराने के शिष्टाचार से वाक़िफ़ नहीं होते और दुआ का कोई स्पष्ट फ़ायदा महसूस न कर के ख़ुदा तआला पर बदज़न हो जाते हैं और अपनी हालत को रहम योग्य बना लेते हैं ।

अन्त में मैं कहता हूँ कि ख़ुद दुआ करो या दुआ कराओ। पाकीज़गी और पवित्रता पैदा करो।इस्तिक़ामत चाहो और तौबा के साथ गिर जाओ क्योंकि यही इस्तिक़ामत है।इस वक़्त दुआ में क़बूलीयत, नमाज़ में लज़्ज़त पैदा होगी।ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ

19 जनवरी 1898 ई

चौदहवीं सदी के मुजद्दिद का काम

नमाज़ मग़रिब के बाद फ़रमाया: ईसाइयों का फ़ित्ना उम्मुल फ़ितन (सब फित्नों की मां) है इसलिए चौदहवीं सदी के मुजद्दिद का काम यक्सरुस्सलीब (सलीब का तोड़ना) है। फिर जो निशानियां इस पर सादिक़ आई, इसलिए चौदहवीं सदी का मुजद्दिद मसीह मौऊद क़रार पाया। क्योंकि हदीसों से मसीह मौऊद का काम यक्सरुस्सलीब प्रमाणित होता है। अब जब कि हमारे विरोधियों को भी मानना पड़ता है कि चौदहवीं सदी के मुजद्दिद का काम यक्सरुस्सलीब ही होना चाहिए, क्योंकि उस के सामने यही मुसीबत है। फिर इनकार के लिए कौन सी गुंजाइश है कि मसीह मौऊद चौदहवीं सदी का मुजद्दिद ही होगा। हमारा ध्यान उन लोगों की तरफ़ है जिनको हक़ की प्यास है लेकिन जो हक़ की तलाश ही नहीं चाहते , जिनकी तबीयतें टेड़ी हैं वह हमसे क्या फ़ायदा उठा सकते हैं? याद रखो हिदायत तो उन को होती है जो द्वेष से काम नहीं लेते। वे लोग फ़ायदा नहीं उठाते जो चिन्तन नहीं करते। अत: हिदायत पाने का इच्छुक समझ ले कि मौजूदा हालतों में चौदहवीं सदी के मुजद्दिद का यह काम है कि कसरे सलीब करे। क्योंकि सलीबी फ़ित्ना ख़तरनाक फैला हुआ है। इस्लाम ऐसा धर्म था कि अगर एक भी इस से मुर्तद हो जाता था तो क़यामत हो जाती थी लेकिन अब किस क़दर अफ़सोस है कि मुर्तद होने वालों की गिनती लाखों तक पहुंच गई है और वे लोग जो मुसलमानों के घर में पैदा हुए थे। अब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जैसे कामिल इन्सान के बारे में जिसकी पाक बातिनी की कोई तुलना दुनिया में मौजूद नहीं, किस्म किस्म के दिल को चोट पहुंचाने वाले आरोप लगा रहे हैं कि करोड़ों किताबें इस सय्यदुल मासूमीन के इन्कार में इस गिरोह की तरफ़ से प्रकाशित हो चुकी हैं। बहुत से स्थायी साप्ताहिक और मामिक अख़बार और रिसाले इस उद्देश्य के लिए जारी कर रखे हैं। फिर क्या ऐसी हालत में ख़ुदा तआला कोई मुजद्दिद न भेजता? और फिर अगर कोई मुजद्दिद आता तो तुम ही ख़ुदा के लिए सोच कर बताओ कि क्या उस का काम यह होना चाहिए कि वह रफ़ा यदैन के झगड़े करे या आमीन बिल्जहर पर लड़ता फिरे।

ध्यान तो दो जो बीमारी महामारी की तरह फैल रही है डाक्टर उस का ईलाज करेगा न किसी और बीमारी का। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अपमान की सीमा हो चुकी। लिखा है कि एक सहाबी ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अपमान अपनी माँ से सुन कर उस को मार दिया था। यह ग़ैरत और जोश था मुसलमानों का, मगर आज यह हाल हो गया है कि तौहीन की किताबें पढ़ते और सुनते हैं ग़ैरत नहीं आती और इतना नहीं हो सकता कि इन से नफ़रत ही करें बल्कि उलटा जो आदमी खुदा ने विशेष रूप से इस फ़ित्ना के सुधार के लिए भेजा है और जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इज़्ज़त और प्रताप के लिए ख़ास किस्म की ग़ैरत लेकर आया है इस का विरोध करते हैं और इस पर हंसी और उपहास करते हैं। ख़ुदा तआला ही उन लोगों को देखने वाली आँख दे।आमीन

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 158 से 160 प्रकाशन 2008 कादियान)

☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad